

नए नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 20: प्रेरितों के काम से लेकर पिन्तेकुस्त तक (प्रेरितों के काम 2)

डॉ. टेड हिल्लेब्रांट

ए. “हम” अंश - दूसरी मिशनरी यात्रा [00:00-4:29]

ए: संयुक्त एसी; 00:00-9:18; दूसरा -तीसरा एमजे और रोम " बी " अंश

वापस आते हुए, हम आज प्रेरितों के काम की पुस्तक पर अपने व्याख्यान जारी रख रहे हैं और हमने प्रेरितों के काम की पुस्तक की संरचना का एक प्रारंभिक सर्वेक्षण किया है, कि यह कैसे यरूशलेम के केंद्र में पीटर से पॉल और पृथ्वी के अंत की संरचना में स्थानांतरित होती है प्रेरितों के काम 1:8। हमने ल्यूक और पृष्ठभूमि के बारे में विभिन्न चीजों को देखा है और संभवतः जब वह इसे लिख रहा है और यह पीटर और पॉल के शब्दों और तुलनाओं को कैसे प्राप्त करता है और हम इससे गुजर चुके हैं। अब मैं जो करना चाहता हूँ वह यह देखना है: क्या ल्यूक ने वास्तव में इस पुस्तक को लिखा है? और मैं ल्यूक और इस पुस्तक में ल्यूक द्वारा खुद को रिकॉर्ड करने पर थोड़ा और ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ। हमारे पास "हम मार्ग" कहलाने वाले हैं और कुछ जगहें हैं जहाँ वह कहता है कि उन्होंने यह किया और उन्होंने वह किया। प्रेरितों के काम 1 में ल्यूक कहता है "उनकी भाषा में," यह स्पष्ट है कि जब वह कहता है "उनकी भाषा में।" तो वह वहाँ तीसरे व्यक्ति का उपयोग करता है। लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक में कुछ स्थानों पर ऐसा है कि "उन्होंने यह किया, उन्होंने वह किया, और फिर अचानक वह इसे बदल देता है, "हमने यह किया, और हमने वह किया।" तो आप इस बात का पता लगा सकते हैं कि इन "हम" अंशों के परिणामस्वरूप लूका पॉल के साथ कहाँ था। तो इन्हें "हम अंश" कहा जाता है और इनमें से तीन ऐसे हैं जिन्हें मैं प्रेरित पॉल की दूसरी मिशनरी यात्रा में विशेष रूप से विकसित करना चाहता हूँ। पॉल तुर्की के केंद्र में पहली मिशनरी यात्रा पर गया था। दूसरी मिशनरी यात्रा में, वह बरनबास और जॉन मार्क को छोड़ देता है। वे साइप्रस जाते हैं और पॉल सीलास को उठाता है और वे मूल रूप से तुर्की से होते हुए उत्तर-पश्चिमी तुर्की तक जाते हैं। वह इफिसुस जाना चाहता है लेकिन आत्मा उसे एशिया के प्रांत के आसपास उत्तर की ओर ले जाती है। इसके बजाय, वे त्रोआस नामक स्थान पर जाते हैं, जो उत्तर-

पश्चिमी तुर्की में ट्रॉय के ठीक दक्षिण में है। त्रोआस वह जगह है जहाँ “ हम ” शुरू होते हैं। तो उदाहरण के लिए अध्याय 16 में, यह दूसरी मिशनरी यात्रा पर है, “पॉल और उसके साथी फ्रीगिया के पूरे क्षेत्र में यात्रा करते रहे, गलातिया को बंद करके रखा गया था।” और फिर यह आगे बढ़ता है, “जब वे सीमा म्यासिया पर आए तो उन्होंने प्रवेश करने की कोशिश की। पॉल ने दर्शन देखा था, उसके बाद यह मैसेडोनिया का दर्शन है: “मैसेडोनिया में आओ और हमारी सहायता करो।” पॉल ने दर्शन देखा था, उसके बाद हम तुरंत मैसेडोनिया जाने के लिए तैयार हो गए, यह निष्कर्ष निकालते हुए कि परमेश्वर ने हमें उनके पास सुसमाचार प्रचार करने के लिए बुलाया है। “जब वे गुजर गए, और फिर जब तुम नीचे जाओ।” तो मूल रूप से, वह त्रोआस से फिलिप्पी जाता है और फिर आपको अध्याय 16 में फिलिप्पी के जेलर के साथ यह स्थिति मिलती है। पॉल ने एक भविष्यवक्ता लड़की से इस राक्षस को बाहर निकाला, मालिकों ने इस लड़की पर पैसा खो दिया क्योंकि वे पैसे कमा रहे थे, उससे भविष्य की भविष्यवाणी की जा रही थी पॉल ने राक्षस को बाहर निकाल दिया, ये लोग अब इस लड़की से कोई पैसा नहीं कमा सकते। वे पॉल पर गुस्सा हो जाते हैं और इसलिए वे उसे जेल में डाल देते हैं।

तो अब, पॉल जेल में है। वहाँ फिलिप्पियन जेलर है, वे रात में जेल में गाना गा रहे हैं और अंत में एक देवदूत आता है और दरवाज़ा खोलता है। फिलिप्पियन जेलर खुद को मारने के लिए तैयार है और पॉल को रिहा कर दिया जाता है और फिलिप्पियन जेलर पूछता है, “मुझे बचने के लिए क्या करना चाहिए? - यह बहुत बढ़िया कथन है। पॉल जवाब देता है, “प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो और तुम बच जाओगे।”

बी. “हम” अंश—तीसरी मिशनरी यात्रा [4:29-5:33]

लेकिन फिर क्या होता है जब पॉल फिलिप्पी छोड़ता है? “ हम ” उत्तरी तुर्की के त्रोआस से फिलिप्पी जाते हैं। फिलिप्पी का नाम मैसेडोन के फिलिप के नाम पर रखा गया है जैसा कि हमने पहले बात की थी। लेकिन फिलिप्पी में, जब वह फिलिप्पी छोड़ता है तो अध्याय 17 में लिखा है “और वे एंटिपोलिस और अपोलोनिया से होते हुए थेसालोनिका पहुँचे।” तो फिलिप्पी से वह थेसालोनिका या आधुनिक थेसालोनिकी जाता है। जब वह वहाँ जाता है तो “ वे ” फिर से शुरू हो

जाते हैं। तो जाहिर है, ल्यूक फिलिप्पी में ही रुका था। तो त्रोआस से फिलिप्पी तक दूसरी मिशनरी यात्रा पर।

फिर तीसरी मिशनरी यात्रा पर क्या हुआ? पॉल फिर से तुर्की से होते हुए आगे बढ़ता है और जब वह फिर से फिलिप्पी पहुँचता है, तो अचानक " हम " फिर से शुरू हो जाते हैं। इसलिए " हम " फिर से फिलिप्पी में शुरू होते हैं, जहाँ लूका रुका था और जब पॉल फिर से आता है तो " हम " शुरू हो जाते हैं। इसलिए हम देखते हैं कि लूका इस ऐतिहासिक रिकॉर्ड में बहुत सटीक है कि वह कब उनके साथ है और कब नहीं, इन " हम " का उपयोग करके। फिर, तीसरी मिशनरी यात्रा पर, वह फिलिप्पी जाता है और फिर " हम " पॉल के साथ वापस यरुशलम तक की यात्रा करते हैं। जब हमने कहा कि तीसरी मिशनरी यात्रा पर पॉल यरुशलम में गरीब लोगों के लिए धन इकट्ठा कर रहा था और इसलिए लूका फिलिप्पी से वापस यरुशलम तक पूरे रास्ते उसके साथ था। फिर दो साल जब पॉल फिलिस्तीन में जेल में था, लूका वहाँ था। जब पॉल कैसरिया में जेल में था, तब वे "हम मार्ग" थे। यरुशलम और फिर कैसरिया, लूका, वे "हम मार्ग" थे। इसलिए लूका पौलुस के साथ दूसरी मिशनरी यात्रा पर त्रोआस से फिलिप्पी और तीसरी मिशनरी यात्रा पर फिलिप्पी से यरूशलेम तक यात्रा करता है।

C. “हम” अंश - पौलुस के साथ रोम की यात्रा [5:33-9:18]

और फिर अध्याय 27 में एक महान अध्याय है, जहाँ पॉल कैसर से अपील करता है। वह कैसर से अपील करता है जब वे उसे यरूशलेम वापस भेजने वाले थे और वह जानता था कि अगर उसे यरूशलेम वापस ले जाया गया तो उसे मार दिया जाएगा। वे एक साजिश रच रहे थे। वे उसे यरूशलेम के रास्ते में मार डालने वाले थे। इसलिए पॉल जानता था कि उसे कुछ करना होगा। वह कैसर से अपील करता है और कहता है, "मैं एक रोमन नागरिक हूँ, मैं कैसर से अपील करता हूँ।" इसलिए अब उन्हें उसे रोम भेजना है और इसलिए वे अग्रिप्पा को लाते हैं और कहते हैं, "हम इस आदमी पर क्या आरोप लगाने जा रहे हैं? हम उसे कैसर के पास भेजने जा रहे हैं और हमें उस पर कुछ आरोप लगाने होंगे।" इसलिए वे उस पर आरोप लगाते हैं और फिर उसे रोम भेज देते हैं। जब वे ऐसा करते हैं तो वे उसे इस नाव पर भेजते हैं और यह नाव भूमध्य सागर को पार करके इटली, रोम जाती है। यात्रा के दौरान फिर एक तूफान आता है और नाव पलट जाती है। यह जहाज़ दुर्घटना

प्रेरितों के काम 27 में घटित होती है और यह हमें जहाज़ को हल्का करने के प्रयास में सभी सामानों को पानी में फेंकने के बारे में बताती है। वे कैदियों को पानी में फेंकना शुरू करने वाले थे, लेकिन पॉल ने उन्हें ऐसा न करने की चेतावनी दी और वे माल्टा के इस द्वीप पर दुर्घटनाग्रस्त हो गए। लेकिन यह, प्रेरितों के काम अध्याय 27 कुछ लोगों ने कहा है कि प्राचीन दुनिया से समुद्र पर यात्रा के सबसे अच्छे प्राचीन विवरणों में से एक है। यह हमारे पास मौजूद शुरुआती अभिलेखों में यात्रा के सबसे अच्छे विवरणों में से एक है, इसलिए यह प्रेरितों के काम अध्याय 27 है। पॉल, और वैसे, ल्यूक उनके साथ है, वे भी "हम मार्ग" हैं। दूसरे शब्दों में, ल्यूक फिलिप्पी से यरूशलेम जाता है और वह पॉल के साथ फिलिस्तीन में दो साल रहता है और जब पॉल रोम जाता है तो ल्यूक उसके साथ होता है, वे "हम मार्ग" हैं।

तो, और फिर यहाँ एक दिलचस्प अंश यह भी है और यह प्रेरितों के काम की पुस्तक के बाद है, यह 2 तीमुथियुस 4:11 में प्रेरितों के काम की पुस्तक के बाद है। यह तब की बात है जब पॉल पहली बार रोम आया था, शायद 63 ई. के आसपास या उसके आसपास और 2 तीमुथियुस इसके बाद है जो कि 67 ई. के करीब है। यह पाँच साल बाद की बात है और 2 तीमुथियुस 4:11। यह पॉल के उस समय के बारे में कहता है जिसे वे दूसरा रोमन कारावास कहते हैं। पॉल को शायद दो बार रोम में दफनाया गया था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में शुरुआती समय लगभग 63 ई. के आसपास है और फिर जाहिर तौर पर वह लगभग 67 या 68 ई. के आसपास मुड़ता है। 2 तीमुथियुस अध्याय 4:10 में पॉल के बोलने के साथ कहा गया है "क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है और थिस्सलुनीके को चला गया है। क्रेसेन्स गलातिया को चला गया है और तीतुस दलमतिया को चला गया है। केवल लूका मेरे साथ है। केवल लूका मेरे साथ है।" तो यहाँ पॉल द्वितीय रोम कारावास में है। जाहिर है कि उस समय ल्यूक अभी भी उसके साथ है। ल्यूक एक डॉक्टर है, संभवतः पॉल की देखभाल कर रहा है। "केवल ल्यूक मेरे साथ है। मार्क को बुलाओ और उसे अपने साथ ले आओ," वह टिमोथी से बात करता है और वह कहता है, "टिमोथी, मार्क को बुलाओ और उसे ले आओ।" जॉन मार्क को याद करो, पॉल और जॉन मार्क के बीच जो दरार थी उसे याद करो। पॉल, अपने जीवन के अंत में, जॉन मार्क को बुलाता है "क्योंकि वह मेरे और मेरी सेवकाई के लिए सहायक है। जब तुम आओ, तो वह लबादा लाओ जो मैंने त्रोआस में कार्पस के पास छोड़ा था और

मेरे स्कॉल, विशेष रूप से चर्मपत्र।" तो पॉल अपना कोट मांग रहा है, जाहिर है कि वहाँ ठंड है। इसलिए वह अपना कोट मांग रहा है और स्कॉल, विशेष रूप से चर्मपत्र लाना याद रखें। और यह 2 टिमोथी 4:11 में एक सुंदर कथन है जो दर्शाता है कि ल्यूक अभी भी पॉल के साथ द्वितीय रोमन कारावास में है। तो ल्यूक के साथ यही पृष्ठभूमि है।

डी. लूका की शैली और थियोफिलस [9:18-11:22]

बी: संयुक्त DE; 9:18-13:22; थियोफिलस और प्रेरितों के काम का उद्देश्य

लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक की शब्दावली और शैली बहुत समान हैं। लूका की पुस्तक बहुत ही शास्त्रीय, उच्च शैली में लिखी गई है। वाक्य संरचनाएँ बहुत लंबी हैं, जिस तरह से इसे लिखा गया है वह अधिक परिष्कृत है। प्रेरितों के काम की पुस्तक भी उसी तरह लिखी गई है। जबकि लूका में सैकड़ों शब्द हैं जिन्हें *हैपैक्स लेगोमेना* कहा जाता है जहाँ केवल एक बार उपयोग किया जाता है, बहुत दुर्लभ शब्द। प्रेरितों के काम को भी बहुत परिष्कृत शैली, बहुत साहित्यिक शैली और एक शास्त्रीय प्रकार की शैली में लिखा गया था। इसलिए लूका और प्रेरितों के काम बहुत समान हैं।

दोनों किताबें थियोफिलस को लिखी गई हैं। उसे सबसे उत्तम थियोफिलस कहा जाता है और लूका अध्याय 1 पद 1-4 इसके बारे में लिखता है और उसे सबसे उत्तम थियोफिलस के रूप में पहचानता है। प्रेरितों के काम अध्याय 1 में भी उसे थियोफिलस के रूप में पहचाना गया है। कुछ लोग सोचते हैं कि यह एक उपनाम या उपनाम अधिक है। वे शब्द को तोड़ते हैं। आप देख सकते हैं कि यहाँ *थियो* शब्द का अर्थ ईश्वर है। *फिलोस*, *फिलाडेल्फिया* की तरह है, फिलाडेल्फिया शहर, भाईचारे [*एडेलफोस*] प्यार का शहर। *फिलोस* कामतलब है "प्यार।" तो इस थियोफिलस का मतलब है "ईश्वर का प्रेमी" इसलिए कुछ लोग सोचते हैं कि ये किताबें किसी ऐसे व्यक्ति के लिए लिखी गई हैं जो ईश्वर का प्रेमी है। समस्या तब होती है जब वह कहता है, "सबसे उत्तम थियोफिलस", "यह एक शीर्षक अधिक लगता है। वह सबसे उत्तम थियोफिलस मुझे लगता है कि लूका वास्तव में पॉल को जेल से बाहर निकालने के उद्देश्य से यह लिख रहा है और पॉल को कैसर के सामने जाना है। इसलिए वह पॉल के बारे में लिख रहा है, " थियोफिलस, क्या तुम इस आदमी की मदद

कर सकते हो, यहाँ पॉल की कहानी है। मैं तुम्हें यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि जब तुम उसका बचाव करने जाओ तो तुम्हें इसकी पूरी पृष्ठभूमि पता चल जाए।"

ई. लूका ने प्रेरितों के काम क्यों लिखे? धर्मशिक्षा और इतिहास [11:22-13:22]

अब ल्यूक ने प्रेरितों के काम की पुस्तक क्यों लिखी? मैं यहाँ कुछ सुझाव देना चाहता हूँ और हम इस पर जल्दी से आगे बढ़ेंगे। थियोफिलस के लिए धर्मशिक्षा संबंधी निर्देश। थियोफिलस एक युवा आस्तिक हो सकता है और ल्यूक यीशु की कहानी लिखता है और कहानियों के बारे में बताता है ताकि वह यीशु की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में जान सके और फिर वह पीटर और पॉल और शुरुआती चर्च की पृष्ठभूमि को भी जान सके। तो धर्मशिक्षा क्या है? आज आप धर्मशिक्षा सीखते हैं। अगर मैं आपसे पूछूँ कि मनुष्य का मुख्य उद्देश्य क्या है? वेस्टमिंस्टर स्वीकारोक्ति का अध्ययन करने वाले अधिकांश लोग, जिसे मैं स्वीकार करते हुए बड़ा हुआ हूँ: मनुष्य का मुख्य उद्देश्य ईश्वर की महिमा करना और हमेशा के लिए उसका आनंद लेना है। ईश्वर एक आत्मा है, अनंत, शाश्वत, अपने अस्तित्व में अपरिवर्तनीय बुद्धि... हमने ये धर्मशिक्षाएँ तब सीखी जब हम बच्चे थे। वेस्टमिंस्टर धर्मशिक्षा, आज कक्षा में कुछ छात्रों ने हीडलबर्ग स्वीकारोक्ति का उल्लेख किया। तो आपके पास ये स्वीकारोक्ति हैं और स्वीकारोक्ति का उपयोग मुख्य रूप से युवा लोगों को यह सिखाने के लिए किया जाता है कि हम क्या मानते हैं। हम जो मानते हैं, और इसलिए यह कैटेकिकल उद्देश्य है कि लूका और प्रेरितों के काम मूल रूप से थियोफिलस को ईसाई धर्म के बारे में प्रशिक्षित करने के लिए लिखे जा सकते थे। थियोफिलस के लिए कैटेकिकल कार्य केवल पॉल के बचाव में नहीं है, बल्कि उस कारण से है।

दूसरा, यह एक इतिहास है। प्रेरितों के काम एक इतिहास की किताब है, लेकिन यह पूरे चर्च का इतिहास नहीं है। यह पूरे चर्च का पूरा इतिहास नहीं है। यह वास्तव में प्रेरित पौलुस पर केंद्रित है। थॉमस, थॉमस ने जो कुछ किया, फिलिप और इनमें से कई अन्य प्रेरितों का उल्लेख प्रेरितों के काम की किताब के पहले कुछ अध्यायों के बाद नहीं किया गया है। प्रेरित मूल रूप से मर जाते हैं और वे फैल जाते हैं और हर जगह चले जाते हैं और फिर यह बात प्रेरित पौलुस की तीन मिशनरी

यात्राओं पर केंद्रित होती है। इसलिए यह पूरा इतिहास नहीं है। जबकि यह प्रारंभिक चर्च का इतिहास है, इसे इस पॉलिन की तरह के फोकस की नज़र से देखा जाता है, जो हमने पहले देखा है।

एफ. ल्यूक की क्षमाप्रार्थी चिंताएँ और ईसाई उत्पीड़न - नास्तिकों का आरोप [13:22-17:21]

सी: संयुक्त एफजी; 13:22-21:10; प्रारंभिक उत्पीड़न के कारण

क्षमाप्रार्थी, कुछ लोग प्रेरितों के काम की पुस्तक को लेकर उसमें यहूदियों के खिलाफ़ क्षमाप्रार्थी देखेंगे। यहूदी हमेशा, जहाँ कहीं भी पॉल जाता है, कैन को उसके खिलाफ़ खड़ा करते हैं और उसे सताते हैं। वे पॉल के खिलाफ़ भीड़, भीड़ और दंगे भड़काते हैं। यह मुख्य रूप से यहूदी लोगों के साथ किया जाता है और मुझे लगता है कि एक निश्चित अर्थ में प्रेरितों के काम की पुस्तक में यहूदियों को बदनाम करने का प्रयास किया गया है। यह दर्शाता है कि ये लोग वास्तव में सिर्फ़ परेशानी पैदा करने वाले थे और इसलिए इस सारी अराजकता के लिए पॉल को दोष न दें। पॉल सिर्फ़ अपना काम कर रहा था और उसका उद्देश्य दंगे और भीड़ और इस तरह की तबाही मचाना नहीं था। यह यहूदियों की प्रतिक्रिया थी क्योंकि वे प्रेरित पॉल और उनकी शक्ति और मसीह के तरीकों के बारे में उनकी शिक्षा के प्रति ईर्ष्या रखते थे। इसलिए प्रेरित पॉल का बचाव करने के लिए एक क्षमाप्रार्थी उद्देश्य है।

जैसा कि हमने बताया, आरंभिक चर्च में ईसाइयों को क्यों सताया गया? मुझे लगता है कि यह समझना महत्वपूर्ण है: आरंभिक चर्च में ईसाइयों को क्यों सताया गया? कई बार जब लोगों को सताया जाता है, तो उस व्यक्ति के खिलाफ़ आरोप लगाए जा सकते हैं और वह व्यक्ति उन आरोपों से पूरी तरह से निर्दोष हो सकता है। लेकिन सिर्फ़ आरोप लगाने और उसे अखबारों में छापने से ही उस व्यक्ति की निंदा हो जाती है। उस व्यक्ति पर आरोप लगाने से ही उसकी निंदा हो जाती है। यह कुछ ऐसा है जैसे लोग बिना किसी सुनवाई के सिर्फ़ आरोप के आधार पर उस व्यक्ति पर फैसला सुना देते हैं। तो यहाँ ईसाइयों के खिलाफ़ लगाए गए कुछ आरोप थे। क्या इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वे सही थे या नहीं? इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता क्योंकि जो हुआ वह यह है कि ईसाइयों को इसी कारण से मारा गया और यहाँ ईसाइयों को इस जगह पर सताया गया और ये सभी बातें ग़लत थीं। ईसाइयों को सताने का एक कारण यह था कि उन्हें नास्तिक माना जाता था। अब, जो

ईसाई यीशु और पिता परमेश्वर की पूजा करते हैं, उन्हें नास्तिक क्यों माना जाएगा? ऐसा इसलिए था क्योंकि वे इफिसस और अन्य स्थानों पर बनाए गए पत्थर और चांदी के देवताओं की पूजा नहीं करते थे। इसलिए उन्हें नास्तिक माना जाता था, वे ऐसे भगवान की पूजा करते थे जिन्हें आप देख नहीं सकते। वे पूजा करते हैं, वे पतली हवा में प्रार्थना करते हैं। वहाँ कोई नहीं है। इसलिए इसलिए ईसाई नास्तिक थे और बड़े पैमाने पर लोगों को यह समझ में नहीं आया कि वे भगवान में बहुत दृढ़ता से विश्वास करते हैं लेकिन पत्थर और चांदी के देवताओं में नहीं। और इसलिए शुरुआती चर्च के पिताओं में से एक, मुझे याद नहीं कि वह कौन था, लेकिन वे उसकी निंदा कर रहे थे, उसे नास्तिक के रूप में मरने की सजा दी जा रही थी। उसने जो किया वह यह था कि वह भीड़ की ओर मुड़ा और उसने कहा, "हाँ, हाँ ठीक है नास्तिक। नास्तिकों को दूर भगाओ," और उसने उनकी ओर इशारा किया क्योंकि वे ही नास्तिक थे, न कि वह। इसलिए उसने कहा, "नास्तिकों को दूर भगाओ," उनकी ओर इशारा करते हुए और आरोप को पलटते हुए।

मुझे दो अन्य बातों का उल्लेख करना चाहिए: एक यह है कि पहली शताब्दी में चर्च द्वारा किया गया प्रारंभिक उत्पीड़न, डॉ. डेव मैथ्यूसन अपने व्याख्यानों में इसे बहुत अच्छी तरह से सामने लाते हैं, और मूल रूप से वे जो कहते हैं वह यह है कि रोमन सीज़र द्वारा रोमन उत्पीड़न वास्तव में पहली शताब्दी में बहुत अधिक नहीं हुआ था। पहली शताब्दी में अधिकांश उत्पीड़न स्थानीय शक्तिशाली लोगों द्वारा उनके छोटे शहरों में सीज़र को खुश करने और सीज़र के प्रति अपनी वफादारी दिखाने की कोशिश में किया गया था। और इसलिए वे जो करते थे वह यह था कि वे अन्य समूहों में ईसाइयों को सताते थे, जो सीज़र के प्रति अपनी वफादारी दिखाने के लिए किसी भी तरह के वंश के थे, लेकिन वे साम्राज्य भर में होने वाले उत्पीड़न नहीं थे जो बाद में डायोक्लेटियन और साम्राज्य में इन अन्य और बाद में बड़े पैमाने पर उत्पीड़न के साथ हुए। इसलिए आपको इस बारे में सोचने की ज़रूरत है कि ईसाइयों को हमेशा सताया नहीं जाता था और इसका एक बड़ा हिस्सा स्थानीय स्तर पर स्थानीय छोटे गणमान्य लोगों द्वारा किया जाता था जो रोमन साम्राज्य के सार्वभौमिक दायरे के बजाय ऐसा करते थे। मुझे लगता है कि इसे समझना महत्वपूर्ण है।

जी. लूका की क्षमाप्रार्थी चिंताएँ और ईसाई उत्पीड़न - अनाचार और नरभक्षी [17:21-21:10]

अब ईसाइयों को क्यों सताया गया? उन्हें नास्तिक होने के कारण सताया गया था, उन्हें अनाचार के कारण भी सताया गया था। अनाचार? अब आप बताइए कि इस अनाचार से क्या मतलब था? उन्होंने अपने भाइयों और बहनों से शादी की। उन्होंने अपने भाइयों और बहनों से शादी की। और इसलिए यह एक तरह का घनिष्ठ समुदाय था जहाँ आप भाइयों और बहनों से शादी करते थे। अब, हम जानते हैं कि भाइयों और बहनों का मतलब अनाचार नहीं था। जब हम समुदाय के लोगों को भाई और बहन कहकर संबोधित करते हैं और हम यह नहीं कहते कि वे उनसे शारीरिक रूप से संबंधित थे, तो उन्हें इसी तरह बुलाया जाता था।

यह एक और बात थी, मैं इसे इस तरह से आगे लाना चाहता हूँ कि हमने अभी बताया कि रोमनों द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए उत्पीड़न में स्थानीय विरोध अधिक था और ईसाइयों के उत्पीड़न के मामले में भी जब तक ईसाई धर्म यहूदी धर्म के अधीन था, यहूदी धर्म को रोमन सरकार में विशेष छूट प्राप्त थी। रोमन सरकार ने मूल रूप से यहूदियों को यहूदी ही रहने दिया। अब कभी-कभी उन्होंने यहूदियों को रोम से बाहर निकाल दिया और आप प्रिस्किल्ला और अक्विला को कोरिंथ से नीचे जाते हुए देखेंगे। यहूदियों के उत्पीड़न के कारण उन्हें बाहर निकाल दिया गया। लेकिन मूल रूप से यह यहूदी नहीं थे, रोमनों ने उन्हें सहन किया और मूल रूप से उन्हें उनके जैसा ही रहने दिया और उन्हें एहसास हुआ कि वे उन्हें परिवर्तित नहीं करने जा रहे हैं। यहूदियों के पास एक विशेष स्थान था और उन्हें साम्राज्य में एक विशेष भूमिका दी गई थी और उन्हें कुछ ऐसे काम करने के लिए मजबूर नहीं किया गया था जो अन्य लोगों को करने के लिए मजबूर किया गया था। तब ईसाई धर्म यहूदी धर्म का एक संप्रदाय था। इसलिए ईसाई धर्म, जब वे यहूदी धर्म के अंतर्गत छिप गए और ऐसा लगा कि यह एक अलग संप्रदाय है, फरीसी और सद्दूकी। तो आपके पास रास्ते के लोग थे या आपके पास नाज़रीन थे, जैसा कि उन्हें कहा जाता था, बस यहूदी धर्म का एक और संप्रदाय होने के लिए। तो यह कुछ इस तरह है, वे लोग सिर्फ यहूदी हैं उन्हें अपनी बात करने दें, यह सिर्फ यहूदी धर्म का एक संप्रदाय है। जब ईसाई धर्म यहूदी धर्म से अलग हो गया और एक विभाजन हुआ और यहूदी धर्म से अलग हो गया और ईसाई धर्म अपने आप खड़ा हो गया, तब कुछ वास्तविक उत्पीड़न हुआ क्योंकि वे यहूदी धर्म की छत्रछाया में छिपे नहीं थे।

वे एक अलग धर्म बन गए और फिर वहाँ थे। बहुत बार, ईसाई समूह भी अपनी बैठकें करते थे और इसे रोमनों द्वारा इस तरह की गुप्त बैठक के रूप में देखा जाता था। आप कभी नहीं जानते कि वे इन गुप्त बैठकों में क्या करते हैं और इसलिए इन गुप्त बैठकों में उन पर आरोप लगाया गया कि वे नरभक्षी थे और वे ईसाई थे ये लोग नरभक्षी थे। वे अपने मालिक का खून पीते हैं और उसका शरीर खाते हैं और यह मेरा शरीर है जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है और वे उसका शरीर खाते हैं और उसका खून पीते हैं। और इसलिए उन्होंने कहा कि शुरुआती ईसाई नरभक्षी थे और इसलिए इन नरभक्षियों और नास्तिकों को हमें मिटा देना चाहिए। क्यों? क्योंकि मूल रूप से कम्युनियन को गलत समझा गया था और उन्होंने इसे उसका खून खाने और पीने और उसके शरीर को खाने के रूप में लिया और इसलिए वे नरभक्षी थे।

तो ये तीन कारण हैं कि क्यों प्रारंभिक चर्च, अब हम कहते हैं कि ये पूरी तरह से झूठे कारण हैं। लेकिन आप राजनीति में बहुत जल्दी सीख जाते हैं कि यह बहुत बार मायने नहीं रखता कि कोई बात सच है या झूठ या नहीं क्योंकि यह आरोप है, और इसलिए आप इस आरोप को बार-बार लगाते हैं, अगर आप एक ही झूठ को बार-बार कहते हैं तो बहुत जल्द लोग झूठ पर विश्वास कर लेते हैं। अगर आप इसे बार-बार कहते हैं और आप इसे ऐसे बताते हैं जैसे यह सच है, तो बहुत जल्द लोग इस पर विश्वास कर लेते हैं। ये लोग नास्तिक हैं; वे नरभक्षी हैं; वे ये गुप्त बैठकें करते थे और अपने भाइयों और बहनों से शादी करते थे। ये लोग अनाचारी हैं और इसलिए हमें पृथ्वी को इनसे मुक्त कर देना चाहिए। इसलिए ईसाइयों को सताया गया और इसलिए प्रेरितों की पुस्तक इस तरह से लिखी गई है कि यह दिखाए, "नहीं, ये बातें गलत हैं।"

एच. ल्यूक ने इसे क्यों लिखा? मिशनरी चिंताएँ [21:10-25:25]

डी: कम्बाइन एच.के.; 21:10-35:50; लूका ने प्रेरितों के काम क्यों और कब लिखे

कुछ मिशनरी चिंता है और हम इस एक्रोस्टिक चैंप के माध्यम से काम कर रहे हैं। पुस्तक में एक मिशनरी चिंता है और यह अब्राहमिक वाचा से जुड़ी हुई है। प्रेरितों के काम की पुस्तक दिखाती है कि सुसमाचार फैल रहा है, कि अब्राहम के वंशज फैल रहे हैं और सुसमाचार को पूरी दुनिया में ले जा रहे हैं। अब्राहम सभी राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद बन रहा है। इसलिए सभी लोगों के लिए यह

मिशनरी आंदोलन है। इसका संबंध है, और आप इसे पवित्र आत्मा के आगमन के साथ बहुत स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में पवित्र आत्मा चार बार लोगों के चार अलग-अलग समूहों पर आता है और आप इसे देख सकते हैं। यह दिलचस्प है कि आत्मा कैसे आती है।

संभवतः सबसे प्रसिद्ध है, पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों के काम 2। पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा नीचे आती है और लोगों के चारों ओर आग लेकर आती है और हवा चलती है और आत्मा उन्हें अन्य भाषाएँ बोलने के लिए प्रेरित करती है। हम यहाँ कुछ ही मिनटों में अन्य भाषाएँ बोलने और चमत्कार के बारे में बात करेंगे। पिन्तेकुस्त आत्मा का आगमन है। पिन्तेकुस्त के दिन मुख्य रूप से यहूदी लोग थे, दुनिया भर से सभी यहूदियों को यरूशलेम जाना था और इसलिए दुनिया भर से यहूदी वहाँ आए। फिर पिन्तेकुस्त के पर्व पर अन्य भाषाएँ बोलना और आत्मा का आना। तो यह पहली बार प्रेरितों के काम 2 में होगा। आत्मा का दूसरा आगमन प्रेरितों के काम अध्याय 8 पद 17 में सामरियों पर दर्ज है। तो प्रेरितों के काम 2 में एक हलचल है कि आत्मा यहूदियों पर आती है। प्रेरितों के काम 8 में यह सामरियों पर आती है और आप जानते हैं कि आप देख सकते हैं कि वहाँ क्या हो रहा है। यह यहूदियों से सामरियों की ओर बढ़ रहा है, यह अध्याय 8 श्लोक 17 को विस्तृत कर रहा है। फिर अध्याय 10 श्लोक 44 और उसके बाद, आत्मा अंततः कुरनेलियुस पर आती है। आपको याद होगा कि कुरनेलियुस प्रतीकात्मक या प्रतिनिधि गैर-यहूदी था। तो अब यह यहूदियों से स्थानांतरित हो गया है, पवित्र आत्मा यहूदियों के माध्यम से आता है और पवित्र आत्मा अध्याय 8 में सामरियों पर आता है, और फिर अध्याय 10 में पवित्र आत्मा गैर-यहूदियों पर आता है। और इसलिए यहूदियों, सामरियों और गैर-यहूदियों के बीच, अध्याय 10 में कुरनेलियुस के साथ लगभग सभी लोग हैं, है ना?

लेकिन नहीं, एक और समूह है और अध्याय 19 की आयत 1-6 में उस क्षेत्र में पॉल लोगों पर हाथ रखता है और जॉन बैपटिस्ट के कुछ शिष्यों पर आत्मा आती है। यह वास्तव में एक आकर्षक अंश है क्योंकि आपके पास जो है और आप इसकी कल्पना कर सकते हैं, ये लोग यरूशलेम आए, उन्होंने जॉन बैपटिस्ट को देखा; वे नीचे गए और जॉर्डन नदी में उनका बपतिस्मा हुआ। वे बैपटिस्ट को जानते हैं। जॉन, फिर वे तुर्की या इफिसुस में घर चले गए। फिर पॉल प्रकट होता है और उन्हें यीशु मसीह के बारे में बताता है और वे कहते हैं कि यीशु मसीह कौन है? हमने उसके बारे में कभी

नहीं सुना। उन्होंने केवल जॉन बैपटिस्ट के बारे में सुना था और उन्हें पश्चाताप का बपतिस्मा दिया गया था और जॉन बैपटिस्ट ने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताया जो आने वाला था लेकिन वे नहीं जानते थे कि कैसे। इसलिए उन्हें जॉन द्वारा बपतिस्मा दिया गया, उन्होंने पश्चाताप किया और फिर वे घर चले गए। इसलिए जब पॉल प्रकट होता है और कहता है, "यीशु," तो वे कहते हैं, "क्या? हमने कभी पवित्र आत्मा के बारे में भी नहीं सुना है। हमने यीशु और अन्य चीजों के बारे में भी नहीं सुना है।" इसलिए पॉल ने उन्हें मसीह के बारे में बताया। आप कह सकते हैं, "ठीक है, हमारे समय और युग में हम बस इंटरनेट पर जाते हैं और आप देखते हैं कि दुनिया में हर कोई जानता है।" लेकिन आप देखते हैं कि उस समय वे लोग यात्रा करते थे और फिर वापस आते थे और वे केवल जॉन द बैपटिस्ट को जानते थे, लेकिन वे यीशु के बारे में नहीं जानते थे। आप कहते हैं, "अच्छा, किसी ने उन्हें ईमेल या कुछ और क्यों नहीं किया?" उनके पास उस तरह की तकनीक नहीं थी, इसलिए चीजे धीरे-धीरे आगे बढ़ीं और ये क्षेत्र अलग-थलग थे, उनमें से कुछ। इसलिए, पॉल प्रकट होता है और वह उन्हें यीशु के बारे में बताता है, उन्हें पवित्र आत्मा के बारे में बताता है, उन पर हाथ रखता है और निश्चित रूप से पवित्र आत्मा प्रेरितों के काम 19 में उन पर आता है। ये जॉन द बैपटिस्ट के कुछ पुराने शिष्य हैं। ये जॉन द बैपटिस्ट के कुछ शिष्य हैं और आत्मा उन पर आती है। वे प्रेरितों के काम 2 की तरह ही अन्य भाषाओं में बोलते हैं। इसलिए पवित्र आत्मा चार बार आती है और आप देख सकते हैं कि कैसे आत्मा यहूदियों से सामरियों से अन्यजातियों और जॉन द बैपटिस्ट के कुछ शिष्यों तक जाती है। आपको यह मिशनरी प्रवाह तब मिलता है जब पवित्र आत्मा इन विभिन्न समूहों में फैलता है और जिसके बारे में प्रेरितों के काम की पुस्तक में बात की गई है।

I. लूका ने क्यों लिखा? - पौलुस का बचाव और भाषण [25:25-28:48]

फिर हमारे पास पॉल का बचाव है। यह वही है जिसका मैंने यहाँ कई बार उल्लेख किया है और मुझे लगता है कि यह हमारा पी, पॉल का बचाव है। मुझे लगता है कि थियोफिलस "सबसे बढ़िया" है थियोफिलस, ल्यूक ल्यूक और प्रेरितों के काम दोनों को दिखाने के लिए लिख रहा है, थियोफिलस के लिए यीशु और चर्च के बारे में सीखने के अपने फायदे के लिए लेकिन पॉल पर ध्यान केंद्रित करते हुए भी कह रहा है, "सबसे बढ़िया थियोफिलस, पॉल कैसर के सामने जाने वाला है

क्या तुम उसे यहाँ मदद कर सकते हो। यहाँ पृष्ठभूमि है, यही कारण है कि उत्पीड़न है।"

इसलिए यह बहुत रोचक है, जब लूका ऐसा करता है। ध्यान दें कि वह इतिहास को कैसे दर्ज करता है। वह चाहता है कि थियोफिलस इतिहास के बारे में समझे, इसलिए वह क्या करता है? वह इसे भाषणों में दर्ज करता है और इसलिए आपको कई भाषण मिलते हैं। आपको पॉल के नौ भाषण मिलते हैं, आपको पीटर के नौ भाषण मिलते हैं। तो क्या हो रहा है कि लूका इन भाषणों को रिकॉर्ड कर रहा है, इसलिए यह ऐसा है जैसे आप प्रेरितों के वास्तविक शब्दों को सुनना चाहते हैं, यह एक प्रत्यक्षदर्शी प्रकार की रिकॉर्डिंग की तरह है। यहाँ वास्तव में उन्होंने क्या कहा। यहाँ पीटर का भाषण है, यहाँ वास्तव में पीटर के नौ भाषण हैं। यहाँ पॉल के नौ भाषण हैं, अगर पॉल पर आरोप लगाया जा रहा है तो उसे उसके अपने शब्दों के आधार पर आरोप लगाने दें। तो जब आप समाचार मीडिया देखते हैं तो आप वास्तविक वक्ताओं को देखते हैं, यह बहुत रोचक होता है। कभी-कभी, जब आप राजनीतिक लोगों को देखते हैं और आप समाचार मीडिया के पूर्वाग्रह को पहचान सकते हैं क्योंकि वे एक निश्चित व्यक्ति को सामने रखते हैं और जो होता है वह यह है कि समाचार मीडिया उस व्यक्ति को खुद बोलने नहीं देगा, लेकिन एक टिप्पणीकार व्याख्या करेगा और आपको बताएगा कि वह व्यक्ति क्या कह रहा है। तो क्या होगा, उनके पास व्यक्ति का शव चित्र होगा, व्यक्ति का वीडियो होगा लेकिन उनके पास टिप्पणीकार का ऑडियो होगा और व्यक्ति को उसके अपने शब्दों में बोलने नहीं दिया जाएगा। आप देखते हैं कि यह कितना मुश्किल है? इस तरह से वे इसे जिस तरह से भी घुमाना चाहते हैं, घुमा सकते हैं। उसे वास्तविक व्यक्ति के वास्तविक शब्दों से निपटने की ज़रूरत नहीं है। दूसरी ओर, आप अन्य समाचार मीडिया को देखते हैं, वे आपको उसी व्यक्ति के शब्दों के लंबे खंड देते हैं और इसलिए आप शब्दों को सुन सकते हैं और शायद 4 या 5 वाक्य क्यों उन्होंने 4 या 5 वाक्य दिए ताकि आप इसे संदर्भ से बाहर न खींच सकें। तो आपको उस व्यक्ति का संदर्भ मिलता है जो वास्तव में कहने की कोशिश कर रहा है और अच्छा नया मीडिया व्यक्ति को अपने शब्दों में बोलने और इसे उठाने की अनुमति देगा। इसलिए ल्यूक, जब वह इतिहास लिखता है, तो वह आपको पीटर के शब्द, नौ उपदेश देता है। पॉल के शब्द नौ भाषण। तो इक्कीसवें व्यक्ति के भाषण हैं जो प्रेरितों की पुस्तक में दिए गए हैं। और एक लेखक जिसे हमने प्रेरितों के काम की इस पुस्तक के लिए पढ़ा, उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक के भाषणों को पढ़ा और पतरस के

भाषणों और पतरस की पत्री के बीच समानताएँ देखीं। पौलुस और पौलुस ने जो लिखा उसके बीच। और इसलिए यह बहुत दिलचस्प है, लूका बहुत सटीक लगता है और इन वक्ताओं के वास्तविक शब्दों को बताता है। प्रेरितों के काम 7 में स्तिफनुस का भाषण एक क्लासिक कथन है और इसलिए जब वे थिओफिलस से पौलुस के बारे में सवाल करते हैं तो वह भाषणों को जानता है और लगभग कुछ मामलों में शब्द दर शब्द जानता है।

जे. लूका ने कब लिखा? पौलुस का परीक्षण और मंदिर का विनाश [28:48-32:37]

ल्यूक ने कब लिखा? और अब यह इसकी तारीख के बारे में बात कर रहा है और मैं वास्तव में इसमें से बहुत सी तारीखों में दिलचस्पी नहीं रखता। जब मैंने अपना नया नियम/पुराना नियम पाठ्यक्रम लिया तो लोगों ने मुझे ये सभी तारीखें याद करवा दीं और मैं उन्हें भूल गया, इसलिए केवल कुछ ही तारीखें हैं जो मैं वास्तव में आपको बताना चाहता हूँ। पुराना नियम क्या आपको याद है कि अब्राहम 2000 ईसा पूर्व था, डेविड 1000, 586 में था, वे बेबीलोन गए और आप जानते हैं कि आपके पास 2000, 1000, 586 जैसी प्रमुख तारीखें हैं। नए नियम में मूल रूप से वह बड़ी तारीख जो मैं आपको बताना चाहता हूँ वह है ई. 70। ई. 70 में मंदिर नष्ट हो गया और यह आज तक यहूदियों के लिए भी एक बड़ी तारीख है। यह टाइटस और रोमनों द्वारा दूसरे मंदिर का विनाश था। लेकिन क्यों, क्या हम यह सुझाव दे रहे हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक ई. 63 से पहले लिखी गई थी? और यह एफएफ ब्रूस नामक व्यक्ति की ओर से आ रहा है जो एक असाधारण न्यू टेस्टामेंट विद्वान है, लेकिन वे कह रहे हैं कि मूल रूप से इसके लिए *विज्ञापन टर्मिनस* 63 ई. से पहले है। अब वे ऐसा क्यों कहते हैं, इसका मुख्य कारण दो खामोशियाँ हैं। पुस्तक में दो बातों का उल्लेख नहीं है। इन बातों का उल्लेख किया गया होता यदि इसे 63 ई. के बाद लिखा गया होता तो इसका उल्लेख किया गया होता। पहली बात यह है: रोम में पॉल के मुकदमे का कोई परिणाम नहीं है। पॉल का क्या हुआ? पॉल रोम गया। हमारे पास वह बड़ा अध्याय 27 था जहाँ उन्होंने जहाज बनाया और जहाज माल्टा द्वीप पर जाकर डूब गया। फिर वह रोम पहुँचता है और रोम में जेल में है। प्रेरितों के काम में हम नहीं जानते कि पॉल के साथ क्या हुआ। पॉल के मुकदमे का परिणाम क्या है? प्रेरितों के काम की पुस्तक अचानक बहुत अचानक समाप्त हो जाती है और बस। यह हमें नहीं बताती कि प्रेरित

पॉल के साथ क्या हुआ। क्या उसका मामला, यह एक अंगूठा ऊपर था या अंगूठा नीचे? पॉल के साथ क्या हुआ? हम प्रेरितों के काम की पुस्तक से नहीं जानते। और यदि प्रेरितों के काम की पुस्तक 65, 68 या 70 ई. के बाद लिखी गई होती तो हमें निश्चित रूप से बताया जाता कि पॉल के मामले का क्या हुआ। फिर से, मुझे लगता है कि हम नहीं जानते कि पॉल के मामले का क्या हुआ क्योंकि पुस्तक अचानक समाप्त हो गई क्योंकि ल्यूक ने थियोफिलस को यह कहते हुए पुस्तक भेजी, "थियोफिलस, क्या तुम पॉल के मामले के परिणाम को प्रभावित कर सकते हो?" और इसलिए इसलिए ई. 63 पॉल के मामले के परिणाम का समय होगा जिसका उल्लेख नहीं किया गया है या उसकी मृत्यु का उल्लेख नहीं किया गया है। पॉल की मृत्यु दूसरे रोमन कारावास के बाद लगभग ई. 68 में हुई। लेकिन पॉल की मृत्यु कहीं नहीं दिखती। पॉल मुकदमे की प्रतीक्षा कर रहा है और फिर अचानक पुस्तक समाप्त हो जाती है। तो आप जानते हैं कि यह ई. 68 से पहले होना चाहिए।

फिर से कोई बड़ी बात नहीं है और मैं पूरी तरह से तिथि निर्धारण की बात में नहीं हूँ, लेकिन 70 ई. में मंदिर के विनाश का कोई उल्लेख नहीं है। यदि यहूदी मंदिर नष्ट हो गए थे, तो आप सोचेंगे कि पुस्तक में इसका उल्लेख किया गया होगा क्योंकि यहूदियों और अन्य चीजों के बारे में अधिनियमों की पुस्तक में बहुत कुछ है, टाइटस, रोमनों द्वारा मंदिर में जाकर उसे नष्ट करने और दूसरे मंदिर को समतल करने का कोई उल्लेख नहीं है। 70 ई. में दूसरे मंदिर का समतल होना यहूदियों के लिए बहुत बड़ी बात है। आज भी, मुझे लगता है कि वे दूसरे मंदिर के विनाश का स्मरण करते हैं। दूसरा मंदिर नष्ट हो गया और यह एक बड़ी बात है। यहूदी लोगों के लिए जब दूसरा मंदिर नष्ट हो जाता है, तो बलिदान प्रणाली या पुरोहिती बिखर जाती है। यह एक बड़ी बात है और इसका उल्लेख भी नहीं किया गया है। यदि अधिनियमों की पुस्तक उसके बाद लिखी गई होती तो आपको लगता कि इसका उल्लेख किया गया होता, खासकर जब पुस्तक यरूशलेम से शुरू होती है और पित्तुकुस्त यरूशलेम में होता है। पुस्तक का बहुत बड़ा हिस्सा यरुशलम पर है, अगर मैं पुस्तक लिख रहा होता तो यह वास्तव में एक अच्छा विचार होता, आप यरुशलम से शुरू करते और यरुशलम के विनाश के साथ समाप्त करते। यह एक पुस्तक और साहित्यिक उद्देश्यों के लिए एक आदर्श अंत होगा। लेकिन फिर से इसमें इसका उल्लेख तक नहीं किया गया है। इसलिए मैं सुझाव दूंगा, जैसा कि कई लोग कहेंगे, कि यह 70 ई. से पहले लिखा गया था, यरूशलेम के विनाश से

पहले।

के. लूका ने कब लिखा? रोम के बारे में अनुकूल दृष्टिकोण [32:37-35:50]

यहाँ 63 ई. की तारीख के लिए एक और तर्क है, न कि 64 ई. के बाद की तारीख के लिए। नीरो नाम का एक सम्राट था। जब मैं नीरो कहता हूँ तो बहुत से लोग पीछे की ओर सोचते हैं। मुझे पढ़ाया गया कि नीरो ने मूल रूप से रोम के एक हिस्से को जला दिया था और फिर नीरो ने जो किया वह यह था कि उसे किसी पर दोष लगाना था। उसने रोम के एक हिस्से को जला दिया क्योंकि वह पुनर्निर्माण करना चाहता था; वह एक तरह का सार्वजनिक कार्य नवीनीकरण चाहता था; वह रोम के एक हिस्से का जीर्णोद्धार करना चाहता था। वह ऐसा नहीं कर सका तो उसने उस जगह को जला दिया और फिर उसने इसका दोष ईसाइयों पर मढ़ दिया। आप देखते हैं कि ईसाई नरभक्षी, नास्तिक, अनाचारी होते हैं और इसलिए वह इसका दोष ईसाइयों पर डालता है। नीरो, उस समय, यह लगभग 64 ई. था, जब नीरो ने ईसाइयों को खंभों पर रखकर उन्हें ज्वलनशील पदार्थ में डुबोकर आग लगा दी और फिर इन लोगों के शरीर जल गए। यह वास्तव में क्रूर दुष्ट उत्पीड़न था जो नीरो ने किया था। हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि 64 ई. से पहले नीरो ईसाइयों पर अत्याचार नहीं कर रहा था, बल्कि आग लगने के बाद ही उसने ईसाइयों पर इसका आरोप लगाया था। तो आपको यह बात समझ में आ गई कि नीरो एक साधारण, साधारण सीज़र है। फिर 64 ई. के बाद नीरो का उत्पीड़न शुरू होता है, और तब दुष्टता वास्तव में शुरू होती है। नीरो एक बहुत ही राक्षसी, दुष्ट व्यक्ति बन जाता है जो ईसाइयों के पीछे पड़ जाता है और उन्हें स्तम्भों पर जला देता है। इसलिए, दूसरे शब्दों में, अगर नीरो ने ऐसा किया होता और ईसाई इस तरह मर रहे होते तो आपको लगता कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में इसका उल्लेख किया गया होगा।

इससे हमें पता चलता कि पॉल ने क्या किया। इसलिए सुझाव यह है कि पॉल को नेरोनियन उत्पीड़न से पहले रिहा किया गया होगा और वहाँ से बाहर निकल गया होगा और फिर पॉल को आज़ादी की अवधि मिली होगी, कुछ लोग सोचते हैं कि पॉल स्पेन चला गया, यह संभव है। फिर वह 67, 68 ई. के आसपास वापस आया और तब उसका सिर कलम कर दिया गया। अब पॉल का सिर कलम किया जाएगा क्योंकि वह एक रोमन नागरिक था, उन्हें सूली पर चढ़ाने की अनुमति नहीं थी,

सूली पर चढ़ाना एक बहुत ही दर्दनाक चीज़ थी, यातनापूर्ण मौत थी और इसलिए रोमन नागरिकों को सूली पर नहीं चढ़ाया जा सकता था। दूसरी ओर, पीटर एक यहूदी था और फिर पीटर भी रोम में था और पीटर को सूली पर चढ़ाया गया था, शायद इसी समय ई. 64 में। पीटर को उल्टा सूली पर चढ़ाया गया था। वे पीटर को सीधा करने के लिए उसे सूली पर चढ़ाने गए और जाहिर तौर पर किंवदंती है कि पीटर ने कहा, "मैं अपने गुरु की तरह सूली पर चढ़ने के योग्य नहीं हूँ," और इसलिए उन्होंने उसे उल्टा सूली पर चढ़ा दिया जो अविश्वसनीय रूप से बुरा था। कहने की आवश्यकता नहीं कि पॉल (लगभग 68 ई.) और पीटर (संभवतः 64 ई.) दोनों की मृत्यु रोम में हुई।

तो हम जो कह रहे हैं वह यह है कि क्योंकि पॉल की मृत्यु का वर्णन नहीं किया गया है, क्योंकि मंदिर के विनाश का वर्णन नहीं किया गया है, और क्योंकि नेरोनियन उत्पीड़न का उल्लेख नहीं किया गया है, इसलिए पुस्तक संभवतः 64 ईस्वी से पहले की है, इसलिए संभवतः 63 ईस्वी की है। पॉल का परीक्षण, फिर उसे रिहा कर दिया गया और प्रेरितों के काम की पुस्तक उससे पहले समाप्त हो जाती है क्योंकि हम पॉल के परीक्षण के परिणाम को नहीं जानते हैं। तो ये बस कुछ तिथि निर्धारण की बातें हैं। महत्वपूर्ण बात जो मैं आपको बताना चाहता हूँ वह है 70 ईस्वी में टाइटस द्वारा मंदिर का विनाश। यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण बात है।

एल. मानक और गैर-मानक के बीच अंतर (वर्णनात्मक/

निर्देशात्मक) [35:50-39:44]

ई: संयुक्त एल.एन.; 35:50-52:43 मानक बनाम गैर मानक; तब और अब

अब मैं प्रेरितों के काम की पुस्तक से और अधिक दार्शनिक और पीछे हटकर ऐतिहासिक दस्तावेजों के बारे में कुछ बड़े सवाल पूछना चाहता हूँ और इतिहास और धर्मशास्त्र, आप इन दोनों को एक साथ कैसे जोड़ते हैं। क्या आप प्रेरितों के काम की पुस्तक से कुछ बातें ले सकते हैं और उन्हें आज एक-एक करके लागू कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, क्या आज भी प्रेरितों के काम की पुस्तक जैसी ही स्थिति है और आप इतिहास को कैसे काम में लाते हैं? क्या आज भी चीजें वैसी ही हैं जैसी तब थीं? प्रेरितों के काम एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। ऐतिहासिक और मानक सामग्री में क्या अंतर है? मानक सामग्री क्या है? मानक सामग्री तब होती है जब आपके पास कोई आदेश होता है

जैसे कि दस आज्ञाएँ। इसमें कहा गया है: तुम हत्या नहीं करोगे, तुम झूठ नहीं बोलोगे, तुम चोरी नहीं करोगे - यह मानक सामग्री है। मूसा ने इसे निर्गमन 20 और व्यवस्थाविवरण 5 में कहा था। क्या आज भी दस आज्ञाओं का पालन किया जाता है? तुम्हें झूठ नहीं बोलना चाहिए, तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए, तुम्हें लालच नहीं करना चाहिए, तुम्हें लोगों की हत्या नहीं करनी चाहिए, तुम्हें अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए। वे आदेश मानक हैं जो निर्गमन के अध्याय 20 और व्यवस्थाविवरण के अध्याय 5 में दिए गए थे। वे सभी समय के लिए हैं, यह मानक सामग्री है। यह चाहिए और चाहिए प्रकार की सामग्री है, यह वही है जो आपको करना चाहिए और फिर यह वही है जो आपको करना चाहिए।

लेकिन इतिहास में ऐसी अन्य सामग्री भी है जो एक तरह की है। मूसा ने लाल सागर या रीड सागर को विभाजित किया। मूसा लाल सागर के दो भागों में आता है, और वह उस पार चला जाता है फिर फिरौन उसके पीछे आता है और लाल सागर उसके ऊपर गिर जाता है और उसके जॉली रोजर्स उसके साथ डूब जाते हैं। तो, हम लाल सागर पर आते हैं, यह हमारे लिए विभाजित नहीं होने वाला है, यह एक ऐसी चीज थी जो वहां हुई थी। यह एक बार की घटना थी। एक ऐतिहासिक घटना जरूरी नहीं कि मानक हो। एक ऐतिहासिक घटना जरूरी नहीं कि मानक हो। लोगों को खेलाने के लिए स्वर्ग से मन्ना नीचे आया। मूसा ने एक चट्टान पर मारा और पानी निकला। क्या यह हर समय के लिए मानक है? यहाँ तक कि मूसा ने भी एक बार चट्टान पर मारा और यह अच्छा था और पानी निकला। दूसरी बार जब उसने पानी पर मारा और भगवान ने कहा कि नहीं मैं चाहता था कि तुम उस समय चट्टान से बात करो। तो दूसरी बार यह अलग होना था और मूसा को उस दूसरी बार के लिए दोषी ठहराया गया। इसे कहने का एक और तरीका है सांकेतिक प्रतिक्रिया बनाम अनिवार्य। और यह ग्रीक व्याकरण से आ रहा है। सूचक क्रिया क्या है इसका कथन है। तो जॉनी स्टोर पर गया। स्टोर के बाद जॉनी बास्केटबॉल गेम देखने गया और जॉनी मूवी देखने गया। फिर जॉनी घर आया और बिस्तर पर चला गया और अगले दिन उठा। ये तथ्य के कथन हैं जो सिर्फ यह बताते हैं कि “जॉनी ने यह किया, जॉनी ने वह किया।” इसे सूचक कहते हैं और सूचक वह होता है जहाँ आप बताते हैं कि क्या हुआ, क्या हुआ, क्या हुआ। आज्ञाकारिता यह है कि जॉनी को स्टोर पर जाना चाहिए क्योंकि उसकी माँ के पास खाने के लिए कुछ नहीं है। जॉनी को बास्केटबॉल गेम में जाना

चाहिए क्योंकि वह टीम का हिस्सा है। जॉनी, आप बास्केटबॉल गेम के बाद पार्टी करने नहीं जाते। यह एक आज्ञाकारिता है, आप किसी को आदेश दे रहे हैं। आज्ञाकारिता, आदेश और सूचक, तथ्य के कथन में क्या अंतर है। वैसे कथन आपको प्रभावित करता है कि आप वही काम कर सकते हैं या नहीं भी कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, ऐतिहासिक आपको सिर्फ यह बता रहा है कि क्या हुआ। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको वही काम करने की ज़रूरत है। आज्ञाकारिता के साथ आपको एक आदेश मिलता है लेकिन कुछ आदेश ऐसे भी होते हैं जिन्हें आपको सिर्फ एक बार करना होता है। इस तरह की बात। तो, सूचक और अनिवार्य के बीच का अंतर, क्या हुआ बनाम क्या होना चाहिए, इसका रिकॉर्ड है। “है” बनाम “होना चाहिए” के बीच का अंतर। क्या है और क्या होना चाहिए, के बीच का अंतर।

एम. प्रेरितों के काम में मानक और गैर-मानक [39:44-44:47]

और इसलिए मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में कुछ ऐसी बातें हैं जो मुझे नहीं लगता कि एक से ज़्यादा बार होने के लिए हैं। वे ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। वे एक बार होती हैं और ऐसा ही होता है। यीशु क्रूस पर मरे। इसका मतलब यह नहीं है कि यीशु को हर साल क्रूस पर मरना चाहिए, उसके बाद यीशु की मृत्यु हो गई, यह खत्म हो गया, यह हो गया। यीशु मरे हुआँ में से जी उठे, यह एक बार की घटना है। और इसलिए, उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक में कहा गया है, "यरूशलेम में रुको" या "जब तक आत्मा न आए तब तक यरूशलेम में प्रतीक्षा करो।" इसका क्या मतलब है? हमें गॉर्डन कॉलेज में अपनी सभी कक्षाएँ लेनी चाहिए और हमें यरूशलेम जाना चाहिए और हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए। बाइबल कहती है, "यरूशलेम में रुको, जब तक आत्मा न आए तब तक यरूशलेम में प्रतीक्षा करो।" इसलिए हमें यरूशलेम जाना चाहिए और तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए जब तक आत्मा न आ जाए और वहाँ हम यरूशलेम में नए नियम की यह कक्षा ले सकते हैं, क्या यह बढ़िया नहीं होगा? मुझे लगता है कि हमें ऐसा करना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि नए नियम का यही मतलब था। नए नियम का अर्थ था कि प्रेरितों को यरूशलेम में तब तक प्रतीक्षा करनी थी जब तक कि आत्मा उन पर न आ जाए और फिर, अध्याय 2 में, अगले अध्याय में, पिन्तेकुस्त होता है, आत्मा आती है, और वे पूरी दुनिया में जाते हैं। तो वह

श्लोक जो कहता है, "जब तक आत्मा न आए तब तक यरूशलेम में प्रतीक्षा करो" यह हमारे लिए नहीं है, यह उनके लिए था। यह हमारे लिए नहीं है। इसलिए आप किसी ऐतिहासिक दस्तावेज़ से कुछ नहीं ले सकते और यह नहीं कह सकते कि हमें ऐसा करना चाहिए, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि उन्होंने ऐसा किया। आपको वहाँ कुछ अंतर करने होंगे।

हनन्याह और सफ़ीरा वे आते हैं और कहते हैं, "हमने अपना सारा माल बेच दिया और जो कुछ हमारे पास था वह सब दे दिया, आप जानते हैं कि हम इसे यहां लाए हैं हमने इसे प्रेरितों के चरणों में रख दिया यह वह सब है जो हमने बेचा, हम आपको दे रहे थे।" खैर, यह झूठ था। भगवान हनन्याह को मारते हैं। भगवान सफ़ीरा को मारते हैं। क्या इसका मतलब यह है कि यदि आप किसी को बताते हैं कि आप एक मिशन यात्रा पर उनका समर्थन करने जा रहे हैं और आप किसी कारण से ऐसा नहीं करते हैं कि आपने पवित्र आत्मा से झूठ बोला या जो भी हो, तो भगवान नीचे आएंगे और आपको मार देंगे? मुझे ऐसा नहीं लगता। इसलिए आपको यह कहते समय बहुत सावधान रहना होगा। हनन्याह और सफ़ीरा मर गए, इसका मतलब यह नहीं है कि ऐसा हर बार सभी के साथ होना चाहिए।

क्या हमें पवित्र आत्मा का इंतज़ार करना चाहिए? आप भोजन के लिए लेन कैफ़ेटेरिया में जाते हैं और इंतज़ार करते हैं और कहते हैं कि मैं इंतज़ार करने जा रहा हूँ और फिर पवित्र आत्मा आकर हमें संदेश देगी। "तैविला, छात्रावास में आओ और हमारी मदद करो।" अच्छा, क्या आपको याद है कि पॉल को एक दर्शन हुआ था और दर्शन में कहा गया था कि मैसेडोनिया आओ और हमारी मदद करो। आपको ईश्वर के दर्शन का इंतज़ार करना होगा जो आपको तैविला आने और वहाँ बाइबल अध्ययन करने या कुछ और करने के लिए कहे? नहीं।

तो पॉल ने माल्टा द्वीप पर वाइपर उठाया और वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया और वहाँ उसने एक साँप उठाया। साँप ने उसे काट लिया और यह एक ज़हरीला साँप था। सभी लोगों को लगता है कि वह एक अपराधी है, वह एक बुरा व्यक्ति है इसलिए साँप ने उसे काटा। जब कुछ नहीं हुआ तो अचानक वे कहते हैं, "वाह, यह आदमी अविश्वसनीय है। ज़हरीले साँप ने उसे काटा और कुछ नहीं हुआ।" सवाल, क्या इसका मतलब यह है कि आपको रैटलस्नेक उठाकर यह कहना चाहिए, "पॉल ने रैटलस्नेक उठाया, इसलिए मैं रैटलस्नेक या कोई भी ज़हरीला साँप उठा सकता हूँ और इससे मुझे

कोई नुकसान नहीं होगा क्योंकि इससे पॉल को कोई नुकसान नहीं हुआ।" नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह मुद्दा है। यही बात लाल सागर के बारे में भी कही जा सकती है। जब आप लाल सागर में जाते हैं तो यह आपके लिए अलग नहीं होने वाला है। यह कुछ ऐसा है जो इतिहास में एक बार हुआ था और आप इतिहास को दोबारा नहीं बना सकते। और मुझे लगता है कि यही मेरा मुद्दा है। आप सभी ऐतिहासिक घटनाओं को लेकर उन्हें हर समय के लिए एक सार्वभौमिक धर्मशास्त्र में नहीं बदल सकते। वे विशेष थीं, वे ऐसी घटनाएँ थीं जो समय के साथ घटित हुईं और उन्हें सार्वभौमिक नहीं बनाया जाना चाहिए। वे वर्णन कर रहे हैं कि क्या है और क्या नहीं, यह जरूरी नहीं कि हर समय के लिए वही हो। इसलिए मैं बस यह पृष्ठभूमि रखना चाहता हूँ। आप ऐतिहासिक सामग्री की व्याख्या कैसे करते हैं? आप ऐतिहासिक सामग्री की व्याख्या कैसे करते हैं? यह सैद्धांतिक सामग्री से अलग है। जब पॉल कहते हैं कि आपको शरीर के फल होने चाहिए, तो आपको शरीर के फल, बुराईयाँ नहीं होनी चाहिए, बल्कि आपको सद्गुण, आत्मा के फल जैसे प्रेम, आनंद, शांति और लंबे समय तक सहन करना चाहिए। आपके पास ये चीजें होनी चाहिए। हाँ, वे सार्वभौमिक हैं। उन्हें सार्वभौमिक होना चाहिए और उन्हें हर समय लागू किया जाना चाहिए। लेकिन तथ्य यह है कि पॉल जब पहली बार ईसाई बने तो वे अरब गए और तीन साल वहाँ रहे, इसका मतलब यह नहीं है कि सभी ईसाइयों को अरब जाना चाहिए और उस तरह रेगिस्तान में समय बिताना चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि यह सच हो।

तो मैं जो करने की कोशिश कर रहा हूँ वह है वर्णनात्मक बनाम निर्देशात्मक। बाइबल का कौन सा भाग निर्देशात्मक है जो हमें बताता है कि हमें क्या करना चाहिए। अन्य भाग केवल वर्णनात्मक हैं, यह वर्णन करता है कि उन्होंने क्या किया। वर्णनात्मक वर्णन करता है कि उन्होंने क्या किया, यह नहीं कहता कि हमें भी वही करना चाहिए। यीशु पानी पर चले, इसका क्या मतलब है? क्या मुझे पानी पर चलना चाहिए? यह काम नहीं करता। तो, यीशु ने ऐसा किया। यह उनकी विशिष्टता थी और यह वर्णनात्मक है। आप यीशु को पानी पर चलते हुए वर्णित करते हैं। आप यह नहीं कह रहे हैं कि सभी लोगों को पानी पर चलना चाहिए। वर्णनात्मक और निर्देशात्मक के बीच अंतर है और आपको उन भेदों को समझना होगा। तो गैर-मानक सामग्री के उदाहरण, और यही वह है जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं: पानी पर चलना और पानी को शराब में बदलना, इस प्रकार की

चीजें। वे ऐतिहासिक रूप से घटित हुई एक बार की चीजें हैं।

एन। आप कैसे बता सकते हैं कि ऐतिहासिक क्या है: तब = अब [44:47-52:43]

अब, आप कैसे बताएँगे कि क्या ऐतिहासिक है और क्या सार्वभौमिक सिद्धांत है? आप ऐतिहासिक चीजों को सार्वभौमिकों, सार्वभौमिक सिद्धांतों से कैसे जोड़ते हैं। मैं इस तरह की समस्या के लिए मूल रूप से चार और शायद पाँच दृष्टिकोणों को देखना चाहता हूँ और फिर हम प्रेरितों के काम 2 में जाएँगे। सबसे पहले कुछ लोग कहते हैं, "तब बराबर अब है।" दूसरे शब्दों में, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में था, वैसा ही अब है। तब बराबर अब है। इसलिए पॉल ने एक साँप उठाया और उसने उसे काट लिया। हम एक साँप उठाते हैं और वह हमें काटता है, हम ईसाई होने के नाते, हमें नीचे नहीं जाना चाहिए और साँप द्वारा जहर नहीं खाना चाहिए। जैसा कि वे उस समय चमत्कार करते थे, एक लंगड़े आदमी के पास जाओ और चलो, "मेरे पास चाँदी या सोना नहीं है, उठो और चलो।" हमें आज भी चमत्कार और ऐसी ही चीजें करने में सक्षम होना चाहिए। और इसलिए यह "तब बराबर अब है।" मैं आपको बता दूँ कि मुझे इस दृष्टिकोण से वास्तविक समस्या है। आप बाइबल में इतिहास को लेकर उसे वर्तमान से जोड़कर नहीं देख सकते--चीजें होती रहती हैं। लाल सागर तब अलग हो गया था, लेकिन अब आपके लिए अलग नहीं होने वाला। आप "तब बराबर अब" के हिसाब से नहीं चल सकते, यह काम नहीं करता। जब हम उत्तरी इंडियाना में थे, तो मैंने इंडियाना के विनोना लेक में ग्रेस कॉलेज में बीस साल से ज़्यादा समय तक पढ़ाया। यह एक शानदार जगह थी। वहाँ एक आदमी था जिसने थोड़े समय के लिए पढ़ाया, उसका नाम होबार्ट फ्रीमैन था। उसने वास्तव में भविष्यवक्ताओं पर लिखी गई सबसे अच्छी किताबों में से एक लिखी है। यह आदमी वाकई बहुत होशियार था, बाइबल में बहुत दिलचस्पी रखता था, उसने भविष्यवक्ताओं पर एक पूरी किताब लिखी और वह शानदार है। वह इसमें शामिल हो गया--और यह 60 और 70 के दशक की बात है, वह कुछ ऐसी चीजों में शामिल हो गया जहाँ उसने करिश्माई उपचार में विश्वास करना शुरू कर दिया। तब जो हुआ वह यह था कि चर्च में कुछ लोग, वे वास्तव में डॉक्टरों के पास नहीं जाते थे क्योंकि उनका मानना था कि अगर आपके पास पर्याप्त विश्वास है तो यीशु आपको ठीक कर देंगे। और, वैसे, मेरा मानना है कि भगवान ठीक कर सकते हैं। मेरा मतलब है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि ईश्वर ठीक कर सकता है, लेकिन डॉक्टरों की भी ज़रूरत है। वैसे, यीशु ने

कहा, "जो स्वस्थ हैं उन्हें चिकित्सक की ज़रूरत नहीं है, लेकिन जो बीमार हैं उन्हें चिकित्सक की ज़रूरत है।" इसलिए यीशु ने कहा कि जो बीमार हैं उन्हें चिकित्सक की ज़रूरत है, एक डॉक्टर की और यह बहुत पहले की बात है। जब कोई बीमार हो तो उसे डॉक्टर के पास जाने दें। लेकिन होबार्ट फ्रीमैन और उनके "ग्लोरी बार्न" ने तब जो किया वह यह था कि वे बच्चों को डॉक्टर के पास नहीं ले जाते थे और वास्तव में बड़ी समस्याएँ थीं। अगर आप बच्चे को डॉक्टर के पास नहीं ले जाते हैं, जब बच्चे को डॉक्टर की देखभाल की ज़रूरत होती है तो बच्चा मर सकता है।

हालांकि, वह लगातार खेलता रहा और मुझे बताया गया कि उसके पैर में खरोंच आ गई। उसके पैर में कट लग गया और उसमें संक्रमण हो गया। अब, संक्रमण से क्या समस्या है? आप कहते हैं, "अरे, तुम कुछ एंटीबायोटिक्स ले लो और यह संक्रमण को दूर कर देगा।" आपको तीन दिन या उससे ज़्यादा समय मिलता है और संक्रमण कम हो जाता है। लेकिन अगर आप संक्रमण का इलाज नहीं करते हैं तो क्या होता है? जब आप बस भगवान से प्रार्थना करते हैं और कहते हैं, "भगवान, मेरे पैर को ठीक कर दो। यह चीज़ संक्रमित हो रही है। अब कृपया मुझे ठीक कर दो।" एक डॉक्टर इसे आसानी से ठीक कर सकता है। खैर, मेरा मतलब है कि दवा के साथ 24 घंटे या दो या तीन दिन शायद आपको संक्रमण को खत्म होने देना होगा लेकिन आज हमारे पास मजबूत एंटीबायोटिक्स हैं।

वह डॉक्टर के पास नहीं गया और इसलिए क्योंकि वह सिर्फ ठीक होने के लिए प्रार्थना करने जा रहा था, संक्रमण गैंग्रीन में बदल गया। अब गैंग्रीन से क्या समस्या है? गैंग्रीन बहुत ज़्यादा गंभीर हो जाता है। आपके पैर में गैंग्रीन हो जाता है और उन्हें आपका पैर काटना पड़ता है। लोगों को मधुमेह है और उन्होंने पैर और अंग खो दिए हैं। आपको गैंग्रीन हो जाता है और उन्हें इसे काटना पड़ता है। उसे पैर में गैंग्रीन हो जाता है, आप फिर भी डॉक्टर के पास जा सकते हैं और वे पैर को काट सकते हैं या घुटने के नीचे या कहीं और। आपको गैंग्रीन हो जाता है और आप डॉक्टर के पास नहीं जाते और यह बदतर हो जाता है और कोई भी गैंग्रीन को नहीं काटता और यह आपके दिल में लग जाता है और आप मर जाते हैं। और ठीक यही हुआ। उसने भगवान पर भरोसा किया और भगवान से प्रार्थना की। एक डॉक्टर इसे इतनी आसानी से ठीक कर सकता था और वह इससे मर जाता है। इससे एक आदमी की ज़िंदगी खत्म हो गई।

तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आपको सावधान रहना होगा। आपको सावधान रहना होगा कि "तब अब नहीं है।" आप सिर्फ प्रार्थना करके ठीक नहीं हो सकते। और आप कहेंगे "धर्मी व्यक्ति की प्रार्थना", तो बाइबल की बातों के बारे में क्या? लेकिन यीशु ने कहा, "सबको चिकित्सक की ज़रूरत नहीं है, लेकिन बीमारों को चिकित्सक की ज़रूरत है।" अगर आप बीमार हैं तो डॉक्टर को दिखाएँ। तो मुझे लगता है कि मैं दोनों /और दृष्टिकोण अपनाता हूँ। आप बीमार होते हैं, आपको डॉक्टर को दिखाने की ज़रूरत होती है और आपको प्रार्थना भी करनी होती है। मुझे लगता है कि यहाँ हम में से कई लोग, उदाहरण के लिए, प्रार्थना कर रहे हैं। यहाँ एक संकाय सदस्य है जो बहुत प्रिय है, जिसे हाल ही में कैंसर हुआ है और हम में से कई लोग उसके लिए लगभग रोज़ाना प्रार्थना कर रहे हैं। हम ईश्वर से उसके ठीक होने के लिए प्रार्थना करते हैं, हम उसके जीवन में ईश्वर के काम करने के लिए भी प्रार्थना करते हैं और इसलिए वह जीवन के अंत के बारे में सोचता है और, हम ईश्वर नहीं हैं, हम उन चीज़ों को नियंत्रित नहीं कर सकते। ईश्वर उसे छोड़ सकता है और ईश्वर उसे घर बुला सकता है। तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आपको बहुत सावधान रहना होगा कि "तब और अब के बीच कोई फर्क नहीं है", आप भगवान से ये सारे चमत्कार नहीं मांग सकते। आपको इस बारे में सावधान रहना होगा। आपको अपने दिमाग का इस्तेमाल करना होगा। तो "तब और अब के बीच कोई फर्क नहीं है" इससे समस्याएँ पैदा हो सकती हैं क्योंकि यह वर्णनात्मक और निर्देशात्मक के बीच का अंतर नहीं देखता। यह इतिहास और नैतिक रूप से मानक के बीच का अंतर नहीं देखता जो कहता है कि आपको यही करना चाहिए। यह वही है जो है, यह वही है जो होना चाहिए और वे जो है और जो करना चाहिए के बीच का अंतर नहीं देखते और यह महत्वपूर्ण है।

दूसरा दृष्टिकोण बिल्कुल विपरीत दिशा में जाता है। यह कहता है कि वर्णनात्मक ऐतिहासिक सामग्री समाप्त हो गई है और निर्देशात्मक सामग्री वह है जो हमें करने की आवश्यकता है, आत्मा के फल, दस आज्ञाओं जैसी चीज़ें। तो यह कहता है कि ऐतिहासिक सामग्री समाप्त हो गई है। प्रेरितों के काम की पुस्तक समाप्त हो गई है। परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र की पुष्टि करने के लिए प्रेरितों के काम की पुस्तक में ये सभी चमत्कार किए, तब तक पवित्रशास्त्र का बहुत कुछ नहीं लिखा गया था, लेकिन फिर भी पवित्रशास्त्र की पुष्टि करने या प्रेरितों की पुष्टि करने के लिए और, यह माना

जाता है कि यह इसका एक बड़ा हिस्सा था। लेकिन उन्होंने मूल रूप से कहा कि "तब अब के बराबर नहीं है।" इसलिए उन्होंने "तब और अब" को अलग कर दिया, इसलिए ये सभी ऐतिहासिक सामग्री समाप्त हो गई। इन लोगों को सेसेशनलिस्ट कहा जाता है। क्योंकि वे मानते हैं कि तब परमेश्वर द्वारा किए गए चमत्कार बंद हो गए हैं। अन्य भाषाओं में बोलना बंद हो गया है। चमत्कारिक उपचार बंद हो गए हैं। अब हमारे पास पवित्रशास्त्र है और इसलिए वे बहुत हद तक कहेंगे कि अब हमारे पास परमेश्वर का वचन है और इसलिए हमें चंगाई और अन्य भाषाओं में बोलने और सभी रहस्योद्घाटन, भविष्यद्वक्ताओं और इस तरह की सभी चीजों की ज़रूरत नहीं है। हमें अब इसकी ज़रूरत नहीं है क्योंकि हमारे पास पवित्रशास्त्र है। इसलिए उन्हें सेसेशनलिस्ट कहा जाता है।

मुझे लगता है कि इसके साथ समस्या यह है कि यह ऐतिहासिक, जो है और जो होना चाहिए, के बीच बहुत ज़्यादा विभाजन करता है। कई बार, यीशु एक बार में एक उपदेश देते हैं लेकिन वे क्या कहते हैं? आप जानते हैं, "धन्य हैं वे जो हृदय से शुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" खैर, मुझे लगता है कि यीशु हमें जो बता रहे हैं वह एक ऐतिहासिक संदर्भ में है लेकिन वे हमें ऐसे सिद्धांत दे रहे हैं जो हर समय लागू होते हैं। तो कभी-कभी आपको इतिहास और मानक और गैर-मानक इतिहास में एक साथ मिल जाते हैं और आपके पास दोनों होते हैं और आप ऐतिहासिक को मानक से अलग नहीं कर सकते। आप इसे इस तरह से अलग नहीं कर सकते। यह इतनी आसानी से अलग नहीं होता। तो इस दृष्टिकोण में मैं डिस्पेंसेशनल शब्द का उपयोग करने से भी नफरत करता हूँ क्योंकि अधिकांश डिस्पेंसेशनलिस्ट, आप डलास सेमिनरी जैसे स्कूल को देखें, वे इस तरह के सरलीकृत विभाजन से बहुत आगे हैं। वहाँ के अधिकांश लोग ऐतिहासिक दस्तावेज़ और मानक दस्तावेज़ के बीच संबंधों की जटिलताओं को समझते हैं, इसलिए मुझे लगता है कि ये तर्क कुछ समय पहले के हैं।

ओ. पत्र बनाम अधिनियम/सुसमाचार [52:43-56:30]

एफ: संयुक्त ओ.पी.; 52:43-59:51; पिन्तेकुस्त का पर्व (प्रेरितों के काम 2)

कुछ लोग पत्रों को लेते हैं और वे कहते हैं कि मूल रूप से आपको जो करना है वह यह है

कि पॉलिन के पत्र हमें वह देते हैं जो मानक है और इसे सुसमाचार और प्रेरितों के कामों के ऊपर मानक के रूप में लिया जाना चाहिए। सुसमाचार और प्रेरितों के काम हमें इतिहास बताते हैं और इसलिए मैंने एक व्यक्ति को सुना है, उदाहरण के लिए, रविवार की कक्षा में मैं बैठा था, जो कह रहा था कि मूल रूप से आप जिस तरह से बाइबल की व्याख्या करते हैं वह यह है कि रोमन एक लेंस है और गलातियों का दूसरा लेंस है। तो आपके पास जो है वह है रोमन और गलातियों का और इसी तरह आप रोमन और गलातियों के लेंस के माध्यम से पूरी बाइबल की व्याख्या करते हैं। और मैं इसे देखता हूँ और कहता हूँ कि आप मजाक कर रहे हैं। नंबर एक: क्या हम बाइबल में कुछ पुस्तकों को अन्य पुस्तकों की तुलना में विशेषाधिकार देते हैं? मुझे लगा कि पूरी बाइबल ईश्वर का वचन है? इसलिए मैं अधिक प्रामाणिक दृष्टिकोण अपनाता हूँ, आपके पास पूरा शास्त्र है। वैसे, पॉल ने इसे कैसे सीखा? आप उत्पत्ति, निर्गमन और लैव्यव्यवस्था से शुरू करते हैं और आप बाइबल के माध्यम से आगे बढ़ते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, गॉर्डन में, हम पुराने नियम और नए नियम का अध्ययन करते हैं और एक दूसरे के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करता है। हम चीजों को विशेषाधिकार देने की कोशिश नहीं करते हैं, वहां एक जैविक एकता है। हम संपूर्णता की सराहना करना चाहते हैं और विशेषाधिकार नहीं देना चाहते हैं और कहते हैं, "ठीक है, आपको इन दो विशेष स्थानों को देने की आवश्यकता है।" जब मैंने लोगों को इस तरह की बात करते सुना है और मैं जो कहना चाहता हूँ, वह यह है कि, "नहीं, वास्तव में, निर्गमन 20 पुराने नियम की ऐतिहासिक कथा में है। और यह दस आज्ञाएँ हैं और इतिहास में वे दस आज्ञाएँ मानक हैं। उस बिंदु पर मानक और इतिहास मिश्रित हैं, इसलिए आपको इसके बारे में सावधान रहना होगा। हम अधिनियमों और सुसमाचारों के दृष्टिकोण से अधिक पत्रों को लेते हैं। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिसे वे "एक कैनन में एक कैनन" कहते हैं। दूसरे शब्दों में आप कुछ पुस्तकों को, जैसे कि रोमन और गलातियों को, अन्य पुस्तकों पर विशेषाधिकार देते हैं।

वास्तव में सच्चाई यह है कि अलग-अलग चर्च ऐसा करेंगे। कुछ चर्च पहाड़ी उपदेश में जीते हैं और बाइबल में सब कुछ पहाड़ी उपदेश पर वापस आता है। वे केवल पहाड़ी उपदेश जानते हैं। और सब कुछ यीशु के पहाड़ी उपदेश पर वापस आता है। खैर, इसके साथ समस्या यह है कि जीवन और बाइबल पहाड़ी उपदेश से कहीं अधिक जटिल है। तो, हाँ, मैं पुष्टि करना चाहता हूँ कि

पहाड़ी उपदेश अब तक दी गई सबसे महान शिक्षाओं में से एक है। लेकिन आपको भजन की इस पुस्तक को याद रखना होगा। आपको प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को याद रखना होगा; आपको प्रेरितों के काम की पुस्तक को याद रखना होगा और चीजें पहाड़ी उपदेश जैसी नहीं हैं। जीवन उससे कहीं अधिक जटिल है। भगवान ने हमें एक पूरी किताब दी है। उन्होंने हमें सिर्फ पहाड़ी उपदेश नहीं दिया। इसलिए आपको समझने के लिए भगवान की पूरी सच्चाई जाननी होगी। आप पूरी बात सीखते हैं ताकि आप टुकड़ों को संदर्भ में रख सकें।

एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक से सिद्धांतों को अलग करती है, और यही वह दृष्टिकोण है जो मुझे पसंद है। यह मूल रूप से यह एहसास कराता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें आरंभिक चर्च का इतिहास दे रही है। लेकिन हम प्रेरितों के काम की पुस्तक से सिद्धांतों, सार्वभौमिक सिद्धांतों को अलग करते हैं। तो, उदाहरण के लिए, क्या हमें प्रार्थना करनी चाहिए? आरंभिक चर्च ने प्रार्थना की ओर धर दौड़ा। क्या हमें प्रार्थना करने वाले लोग होना चाहिए? वे, प्रेरित, प्रार्थना करने वाले लोग थे। हमें प्रार्थना करने वाले लोग होना चाहिए। आरंभिक चर्च उदार था और खुले दिल से मदद करता था लेकिन गरीबों की मदद करना उनका अपना निर्णय था। क्या हमें गरीबों की मदद करने में उदार होना चाहिए? हाँ, हमें होना चाहिए। तो आप इसमें से सिद्धांतों को अलग करते हैं और वैसे, क्या यह उसी तरह है जब हमने पुराने नियम की कक्षा में व्यवस्थाविवरण के बारे में बात की थी, कानून और टोरा को लेते हुए। आप कानून को कैसे लेते हैं और इसे आज के समय में लागू करते हैं? आप इतिहास में सिखाए गए गहरे सिद्धांतों और उस समय के गहरे सिद्धांतों को देखते हैं, और गहरी संरचना का स्तर हर समय लागू होता है। और इसलिए, मुझे लगता है कि यह पद्धति हमें अधिक मदद करती है, लेकिन फिर आपको चीजों को छांटना पड़ता है क्योंकि कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो सिर्फ ऐतिहासिक विवरण हैं, सिर्फ उस समय के लिए और उन ऐतिहासिक विवरणों से निकलने वाली अन्य चीजें हैं जो आपको ये अधिक सार्वभौमिक सिद्धांत देती हैं।

पी. पिन्तेकुस्त और इस्राएल के पर्वों की पृष्ठभूमि [56:30-59:51]

अब, मैं यहाँ पिन्तेकुस्त पर हुए चमत्कारों और पिन्तेकुस्त पर घटित घटनाओं पर चर्चा करने

के लिए थोड़ा काम करना चाहूँगा। और इसलिए, मुझे इसे शुरू करने के लिए, बस पेंटेकोस्टल अनुभव के बारे में प्रेरितों के काम 2 को पढ़ना शुरू करना है। अब, वास्तव में बहुत सारे चर्च हैं जो जैसा कि हमने कहा कि केवल पहाड़ी उपदेश, पहाड़ी उपदेश, पहाड़ी उपदेश पर ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन अन्य चर्च जो केवल प्रकाशितवाक्य की पुस्तक करते हैं और वे हमेशा भविष्यवाणी, भविष्य की भविष्यवाणी के बारे में बात करते हैं और, क्या मसीह विरोधी क्लेश से पहले या बाद में आ रहा है या क्या मसीह क्लेश अवधि के बीच में या बाद में आ रहा है? रैप्चर कब होता है? क्या आप पीछे छूट जाएँगे? हमारे पास यह सब, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से बयानबाजी है। कुछ लोग इसमें शामिल हो जाते हैं और वे केवल क्लेश ही देख पाते हैं, "ओह यह भयानक होने वाला है। वे आपके मस्तिष्क में चिप्स डाल देंगे और फिर आपके हाथों पर जानवर के निशान लगा देंगे।" वे सभी चीज़ों को लेकर परेशान हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने केवल यही अध्ययन किया है। आप कहते हैं, "रुको, रुको, रुको।" रहस्योद्घाटन की पुस्तक बाइबल में है, मुझे लगता है कि हम सभी को रहस्योद्घाटन की पुस्तक का अध्ययन करने की आवश्यकता है और डॉ. मैथ्यूसन, वैसे, इन टेपों पर वे रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर दो या तीन महान व्याख्यानों में स्पष्ट रूप से बताते हैं। वे सर्वनाश साहित्य के विशेषज्ञ हैं, इसलिए मुझे लगता है, हाँ, हमें रहस्योद्घाटन की पुस्तक का अध्ययन करने की आवश्यकता है, लेकिन हमें जेम्स की पुस्तक का भी अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमें रोमियों की पुस्तक और विश्वास द्वारा औचित्य का अध्ययन करने की आवश्यकता है, लेकिन हमें जेम्स की पुस्तक का भी अध्ययन करने की आवश्यकता है "कार्यों के बिना विश्वास मृत है।" और इसलिए क्या होता है जब आप संपूर्ण कैनन प्राप्त करते हैं, यह पूरी पुस्तक ईश्वर का वचन है और एक भाग को दूसरे पर विशेषाधिकार देने से आपको कुछ समस्याएँ होती हैं।

मैं सिर्फ प्रेरितों के काम 2 पढ़ता हूँ और मुझे लगता है कि कुछ लोग इस अध्याय पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन यह कहता है "हर जाति के यहूदी परमेश्वर का भय मानते हुए यरूशलेम में रह रहे थे।" ऐसा क्यों है? यह पिनतेकुस्त का पर्व है। तीन पर्व थे जब सभी यहूदियों को यरूशलेम आना था। फसह हमारे ईस्टर के समय के आसपास है जब मसीह मरा और उठाया गया था। फसह का समय, जब इस्राएलियों ने लाल सागर के पार मिस्र से बाहर आने और फसह के

पर्व का जश्न मनाया लेकिन उन्हें जाने दिया गया, मृत्यु का दूत गुजर गया, खून को दरवाजों के ऊपर डाला गया और *मैज़ो खाया गया और मूल रूप से वहां सामुदायिक भोजन हुआ। फसल का भोजन, फसल का* मेमना वध किया जाता है और इस तरह फसल हमारा ईस्टर का समय है, वसंत ऋतु। फिर लगभग पचास दिन बाद वे "पिन्तेकुस्त" *नामक* पर्व मनाते फिर दूसरा पर्व जिसका यहाँ उल्लेख नहीं किया गया है, वह है पतझड़ में होने वाला झोपड़ियों का पर्व। सितंबर में, झोपड़ियों का पर्व, वह समय होता है जब वे बाहर निकलते हैं और चालीस वर्षों तक जंगल में भटकने की याद करते हैं। उन्हें बाहर जाकर झोपड़ियों और तंबुओं में रहना चाहिए, जैसा कि इस्राएलियों ने अपने चालीस वर्षों के भटकने के दौरान किया था। लेकिन पिन्तेकुस्त का यह पर्व मूल रूप से वसंत में गेहूँ और जौ की फसल के समय का अंत था। फसल से गेहूँ और जौ की फसल शुरू होगी और फिर पिन्तेकुस्त से अनाज की फसल समाप्त होगी। पतझड़ में आपके पास जैतून, अंजीर और अंगूर का पर्व होता है। फल पतझड़ में होते हैं लेकिन वसंत में वे अनाज, गेहूँ और जौ की फसल काटते हैं। इसलिए ये पर्व भी उसी के साथ समन्वय करते हैं।

प्रश्न: प्रेरितों के काम 2 में अन्यभाषा में बोलना [59:51-63:29]

जी: संयुक्त क्यूएस; 59:51-72:35 अंत ; प्रेरितों के काम 2 में अन्य भाषाएँ

तो, यहूदी दुनिया भर से पिन्तेकुस्त के लिए आ रहे थे, यह संभवतः जून के महीने में या उसके आसपास का समय था। “और जब उन्होंने यह आवाज़ सुनी तो एक भीड़ हैरानी में इकट्ठी हो गई क्योंकि हर एक ने उन्हें अपनी भाषा में बोलते हुए सुना। “तो ये लोग पूरी दुनिया से हैं और अचानक एक आदमी मेसोपोटामिया से आता है और इन लोगों को धाराप्रवाह अरामी बोलते हुए सुनता है और कहता है, “वाह, इन लोगों ने यह भाषा कहाँ से सीखी?” आपके पास संभवतः रोम से आने वाले लोग हैं जो पूरी तरह से लैटिन बोलते हैं या हर जगह से कुछ और बोलते हैं। वह कहता है, “वे बहुत हैरान होकर पूछते हैं ‘क्या ये लोग जो बोल रहे हैं वे गैलीलियन नहीं हैं?’” इसका क्या मतलब है? क्या वे गैलीलियन नहीं हैं? यह एक तमाशा है। इसका मतलब है कि ये लोग देहाती हैं। ये देहाती लोग मेरी भाषा कैसे जानते हैं ? आप जानते हैं कि वे सिर्फ गैलील से हैं, वे प्रांतीय हैं और वहाँ बहुत अलग-थलग हैं। ऐसा कोई तरीका नहीं है कि वे मेरी भाषा जानते हों। ये लोग देहाती

पहाड़ी या देहाती हैं। यह कैसे संभव है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति उन्हें अपनी मातृभाषा में सुनता है? पार्थियन, मेदी, एलामाइट, और मेसोपोटामिया, यहूदिया, कप्पादोसिया, पुन्तुस, एशिया, फ्रूगिया और पम्फूलिया और मिस्र और कुरेने के पास लीबिया के कुछ हिस्सों के निवासी।” क्या आपको साइमन द कुरेनी याद है जिसने यीशु का क्रूस उठाया था? वह लीबिया से है। वह कुरेने से है जो मूल रूप से एक मुअम्मर गद्दाफी था और ऐसा हाल ही में लीबिया में हो रहा है। “रोम से आए आगंतुक, (यहूदी और यहूदी धर्म में धर्मांतरित दोनों); क्रेटन और अरब - हम उन्हें अपनी-अपनी भाषाओं में परमेश्वर के चमत्कारों की घोषणा करते हुए सुनते हैं।” “जीभ” शब्द ग्रीक में *ग्लोसोलालिया* है। “जीभ” शब्द का अर्थ “भाषा” भी होता है। “अपनी भाषा में। हैरान और हैरान होकर वे एक-दूसरे से पूछते हैं ‘इसका क्या मतलब है?’ हालाँकि, कुछ लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाया और कहा ‘उन्होंने बहुत ज़्यादा शराब पी ली है!’” उन्होंने बहुत ज़्यादा शराब पी ली है। ये लोग नशे में हैं क्योंकि वे इन भाषाओं में बोल रहे थे, ये लोग नशे में हैं। तब पतरस ग्यारह लोगों के साथ खड़ा हुआ और अपनी आवाज़ ऊँची करके भीड़ को संबोधित किया।” यहाँ हमें पतरस का एक छोटा सा भाषण मिलता है। “साथी यहूदियों और तुम सब जो यरूशलेम में रहते हो, मैं तुम्हें यह समझाता हूँ। मेरी बातों को ध्यान से सुनो। ये लोग नशे में नहीं हैं, जैसा कि तुम सोचते हो।” वे नशे में क्यों नहीं हैं? खैर, अभी सुबह के सिर्फ़ 9 बजे हैं, नशे में होना बहुत जल्दी है। “ये लोग नशे में नहीं हैं, अभी सुबह के सिर्फ़ 9 बजे हैं। नहीं, यह वही है जो भविष्यवक्ता योएल ने कहा था: “आखिरी दिनों में परमेश्वर ने कहा है ‘मैं लोगों पर अपनी आत्मा उंडेलूँगा।’” योएल ने योएल 2 की किताब में इस तरह की भविष्यवाणी की थी। “तुम्हारे बेटे और बेटियाँ, तुम्हारे बेटे और बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे [सिर्फ़ तुम्हारे बेटे नहीं], बल्कि तुम्हारे बेटे और बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे। तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, तुम्हारे बूढ़े सपने देखेंगे। मैं उन दिनों अपने सेवकों पर भी अपनी आत्मा उंडेलूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे।” फिर वह वहाँ से नीचे चला जाता है। तो फिर सवाल उठता है कि यह अन्यभाषा में बोलना क्या है और इसके साथ यहाँ क्या हो रहा है? मैं इस तरह की किसी चीज़ का कैसे न्याय करूँ? हमारे पास आधुनिक भाषा में बोलना है। क्या यह वही है जो प्रेरितों के काम 2 में चल रहा था? आपको इनमें से कुछ आधुनिक चीज़ों से सावधान रहना होगा।

आर . आज अन्यभाषा में बोलना [63:29-68:28]

अब मैं कुछ बातें समझाने के लिए इस तरह की कहानी से शुरुआत करता हूँ। 1970 के दशक में जब मैं कॉलेज में था, तो मुझसे एक समूह ने पूछा, यह यीशु आंदोलन के दिनों की बात है और इसलिए--बहुत से लोग शायद नहीं जानते, यह बहुत पहले ही भुला दिया गया है, लेकिन कीथ ग्रीन जैसे लोग और एक यीशु आंदोलन था। उन्हें यीशु सनकी कहा जाता था, मुझे खेद है, 70 के दशक में यीशु आंदोलन के समय यीशु सनकी। मैं उस समय बफेलो विश्वविद्यालय में था, वहाँ स्प्रिंगविले से एक समूह आया था और उन्हें आश्चर्य हुआ कि क्या मैं स्प्रिंगविले में बाइबल अध्ययन का नेतृत्व कर सकता हूँ, इसलिए मैं इस समूह में गया और मैंने सोचा कि मुझे समय से पहले ही वहाँ जाना चाहिए। मैं इन लोगों को बहुत अच्छी तरह से नहीं जानता हूँ और यह मेरे रहने के स्थान से काफी दूर दक्षिण में था, इसलिए मैं वहाँ जाना चाहता था और देखना चाहता था कि वे क्या करते हैं। बस यह देखने के लिए कि क्या मैं उनके साथ फिट हो सकता हूँ। जब भी आप कुछ करते हैं, तो आपको उसके बारे में सुसंगत होना चाहिए, वे क्या उम्मीद कर रहे हैं और जब यह शास्त्र की बात आती है तो वे क्या सोचते हैं। इसलिए मैं वहाँ गया और वहाँ सनशाइन नाम का एक लड़का था। अब सनशाइन कैलिफोर्निया से आया है। तो सनशाइन आया, उसने अपनी पीठ पर गिटार लटका रखा है, उसके लंबे बाल हैं, 60 और 70 के दशक की शुरुआत में यह एक बड़ी बात थी। तो सनशाइन इसे करने जा रहा था। तो उसने शुरू किया, आप जानते हैं, उसने बाइबल पर थोड़ा अध्ययन किया और जो कुछ हो रहा था, उसके बारे में बताया और फिर उसने गिटार बजाया। हमने गाया "यह बढ़िया था," मैंने कहा, "ठीक है, हम यह कर सकते हैं।" फिर जो हुआ वह यह था कि उसने मूल रूप से कहा कि रोशनी कम कर दो और हम प्रार्थना करने जा रहे हैं। और देखिए आम तौर पर जब मैं प्रार्थना करता हूँ तो मैं अपनी आँखें बंद करके रोशनी कम कर देता हूँ। लेकिन उसने वास्तव में उन्हें रोशनी कम करने के लिए कहा और मैंने कहा कि यह थोड़ा अजीब है। तो फिर सनशाइन यहाँ था और मूल रूप से वह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के पास गया और मूल रूप से कहा, "भगवान को अपने जीवन में आने दो," और "खुल जाओ और भगवान को नियंत्रण करने दो।" और बहुत जल्द ही लोग एक के बाद एक अनूठे ढंग से बोलने लगे और कुछ ऐसा करने लगे, जो मैंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। बहुत जल्द ही वह इधर-उधर जाने लगा और हर कोई

कुछ न कुछ कर रहा था और अब वह मेरे पास आता है और मैं सोच रहा हूँ, "हे भगवान, मैं यहाँ क्या करने जा रहा हूँ? क्या मुझे थोड़ा-बहुत वही करना चाहिए जो मैं जानता हूँ, स्पेनिश ? तो मैं "ब्यूनस डायस , कोमो" करता हूँ एस्टा usted " ? मैं यहाँ क्या कर सकता हूँ? उसने मेरी तरफ देखा, मेरी बाँहों को पकड़ लिया और मैंने सोचा, "ओ यार यह है," मुझे नहीं पता था कि क्या उम्मीद करनी है या क्या सोचना है। उसने मेरी तरफ देखा और फिर, मुझे नहीं पता, मेरे चेहरे पर यह अजीब सा भाव रहा होगा। लेकिन वैसे भी वह बस पीछे हट गया, वह पीछे हट गया और मुझे कुछ भी नहीं करने दिया। तो मैं कमरे में एकमात्र व्यक्ति था जो कुछ भी नहीं कर रहा था, मैं वैसे भी बहुत प्रार्थना कर रहा था, और मूल रूप से और उस रात मेरी प्रार्थना थी कि जैसे ही मैं उस रात बाइबल अध्ययन से बाहर निकला, मैंने सड़क से एक मील नीचे गाड़ी रोकੀ और मैंने कहा "भगवान क्या यह आपकी ओर से है? मुझे नहीं पता कि वहाँ क्या हुआ।" मैं समझ नहीं पाया कि ये लोग क्या कह रहे थे

जैसा कि मैंने कहा कि मैं एक तरह से कट्टरपंथी बैपटिस्ट की पृष्ठभूमि से हूँ और मैं इसे कम नहीं आंकता। मैं जानता हूँ कि बहुत से लोग कट्टरपंथी बैपटिस्ट की आलोचना कर रहे हैं, उन्हें नीची नज़र से देख रहे हैं। उन्होंने मुझे बहुत सारे शास्त्र सिखाए, मैंने बहुत सारे अच्छे सिद्धांत और बहुत सारे मूल गुण सीखे जो उन्होंने मुझे सिखाए। लेकिन, सच कहूँ तो, मैं अब ज़्यादा बात नहीं करता इसलिए हम नीची नज़र से देखते हैं और खुद को बौद्धिक अभिजात वर्ग के रूप में विशेषाधिकार देते हैं, आप मेरी आवाज़ में व्यंग्य सुन सकते हैं। मुझे लगता है कि यह बहुत समय से पहले है और यह - विशेष रूप से जो मैं आज अपने देश में देख रहा हूँ, मुझे लगता है कि हमें मौलिक सिद्धांतों पर एक अच्छी नींव की थोड़ी और ज़रूरत है, अगर हम अब भी जानते हैं कि इसका क्या मतलब है।

लेकिन वैसे भी, मैं निराश हूँ और मैं मूल रूप से कह रहा हूँ, "भगवान क्या होगा, मुझे कोई सुराग नहीं है।" तो फिर, 60 के दशक के अंत में और 70 के दशक की शुरुआत में एक करिश्माई आंदोलन चल रहा था और करिश्माई चर्चों में बहुत उत्साह और जीवंतता थी और यह वास्तव में एक अच्छी बात थी क्योंकि बहुत सारे अच्छे चर्च थे जो मर चुके थे। मृत लकड़ी की तरह और करिश्माई लोगों की जीवंतता ने जुनून को वापस ला दिया। इसने भगवान के लिए जुनून और बहुत सारी पूजा

भी वापस ला दी। जबकि जब मैं बड़ा हो रहा था तब चर्च बहुत शामिल थे, एक तरह से उपदेशात्मक तरीके से शास्त्र की शिक्षा देने में शामिल थे। लेकिन भगवान की पूजा के लिए यह जुनून नहीं था। यह नैतिक सिद्धांतों और ईसाई होने के बहुत संकीर्ण तरीकों को सिखाने के बारे में था, आप धूम्रपान नहीं करते, आप शराब नहीं पीते, आप फिल्में नहीं देखते या जो कुछ भी था। उन्होंने भगवान की पूजा पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय इस तरह की बहुत सीमित सीमाओं को शामिल किया। इसलिए मुझे लगता है कि कुछ मायनों में करिश्माई आंदोलन का वास्तव में व्यापक प्रभाव पड़ा और यह ईसाई संस्कृति के लिए काफी मददगार रहा।

एस. क्या आने वाला है और निष्कर्ष [68:28-72:35]

लेकिन फिर यहाँ पर अन्यभाषा में बोलने की बात क्या है? मैं अब पुस्तक A cts 2 पर वापस जाना चाहता हूँ। खैर, हम इसे देखते हैं और यह विदेशी भाषा थी। ऐसा लगता है कि जैसा कि हमने अभी यहाँ वर्णित किया है कि ये यहूदी पूरी दुनिया से हैं और परमेश्वर यह संकेत दे रहा है कि वह परमेश्वर है, इन नीली कॉलर वाले हिक्स, देहाती लोगों द्वारा जो अपनी भाषा को मुश्किल से जानते हैं, दुनिया भर की भाषाओं को बोलते हुए और फिर दुनिया भर से आने वाले यहूदियों द्वारा यह जानते हुए कि वे उन्हें अपनी मूल भाषा में बोलते हुए सुनते हैं, उन्हें यह बताते हुए कि यह परमेश्वर की ओर से कुछ है। यह सिर्फ़ उनका बना हुआ नहीं है, यह परमेश्वर की ओर से है। वास्तव में, पतरस कहता है कि यह वही है जो योएल ने कहा था कि, "आत्मा तुम्हारे बेटों और बेटियों पर आने वाली है और वे भविष्यवाणी करने वाले हैं।" आत्मा का आना वैसा ही होगा जैसा कि आपने मसीहा के आने पर देखा था। इसलिए योएल भी आत्मा के आने के बारे में बात करता है और पित्तेकुस्त पर यह वास्तव में होता है और यह बाहरी संकेतों और चमत्कारों में दिखाया गया है और संकेतों और चमत्कारों में से एक वास्तव में अन्यभाषा में बोलना है। इतना कि उन्होंने पहचान लिया कि वह भाषा उनकी मूल भाषा है।

तो मैं जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि हमें इस बारे में बात करने की ज़रूरत है और मैं इसे एक बड़े परिदृश्य में रखना चाहता हूँ, मुझे बस इसकी रूपरेखा बतानी है और फिर हम इसे समाप्त कर देंगे क्योंकि हम इसे समाप्त कर देंगे और मैं इन व्याख्यानों को उस चीज़ के साथ

समन्वयित करने का प्रयास कर रहा हूँ जो हम वास्तव में सप्ताह के दौरान कक्षा में कर रहे हैं। अगली बार मैं जो करना चाहूँगा वह है प्रेरितों के काम 2 को देखना, प्रेरितों के काम 2 विशिष्ट भाषा समूहों और क्षेत्रों के बारे में बात करता है जहाँ से वे आते हैं, इसलिए जब वे अन्य भाषाओं में बोलते हैं तो यह विदेशी भाषा है, यह निश्चित रूप से विदेशी भाषा है। मैं प्रेरितों के काम 8 पर जाना चाहता हूँ जब आत्मा सामरियों पर आई थी और मैं देखना चाहता हूँ कि वहाँ क्या हुआ। मैं प्रेरितों के काम 10 पर जाना चाहता हूँ और देखना चाहता हूँ कि जब आत्मा कुरनेलियुस पर आई थी जो यहूदी नहीं बल्कि एक गैर-यहूदी था, अध्याय 10 में एक गैर-यहूदी जब आत्मा उस पर आई थी तो क्या हुआ था। फिर प्रेरितों के काम अध्याय 19 में पॉल के साथ क्या होता है, जिसका हमने पहले उल्लेख किया था, जब पॉल ने जॉन द बैपटिस्ट के कुछ शिष्यों पर हाथ रखा, जो यीशु के बारे में नहीं जानते थे, मुझे लगता है कि यह इफिसुस में था, और उसने उन पर हाथ रखा और उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त की। उनके साथ क्या होता है? और फिर मैं जो करना चाहता हूँ वह अध्याय 2, अध्याय 8, अध्याय 10 और अध्याय 19 को इकट्ठा करना है जब आत्मा उन पर आती है और वहाँ अन्य भाषाओं में बोलते हुए देखते हैं और कहते हैं कि यह प्रेरितों के काम में अन्य भाषाओं में बोलना है।

फिर मैं 1 कुरिन्थियों 12 पर जाना चाहूँगा और वहाँ कुछ बातें बताना चाहूँगा क्योंकि हमारे पास 1 कुरिन्थियों 12 में भी उस समय आत्मा के आने का रिकॉर्ड है। अब, जब हम ऐसा करेंगे तो मैं पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बारे में बात करना चाहूँगा और मुझे लगता है कि आपको एक श्लोक मिल गया होगा जो मुझे लगता है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के इस पूरे मामले में बहुत महत्वपूर्ण है। हम बाद में इस पर बात करना चाहते हैं, यह कुरिन्थियों से आता है। इसलिए मुझे लगता है कि मैं इसे अगली बार के लिए छोड़ दूँगा और अगली बार हम अन्य भाषाओं पर बोलने पर ध्यान केंद्रित करेंगे और यह आज के लिए है या नहीं और इसका कार्य क्या था और यह पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से कैसे जुड़ता है। मैं जो सुझाव देने जा रहा हूँ वह यह है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा परमेश्वर की पवित्र आत्मा का वह कार्य है जिसके द्वारा वह यहूदी और यूनानी, नर और मादा को एक शरीर में जोड़ता है। इसलिए पवित्र आत्मा का कार्य वह है जिसके द्वारा वह शरीर को उसकी सभी विविधताओं से मसीह के एक शरीर में ढाल देता है। तो हमारे पास आगे देखने के लिए बहुत कुछ है और हम अगली बार इस पर चर्चा करेंगे। धन्यवाद।

स्टेवी श्वेइगहार्ट द्वारा लिखित
बेन बोडेन द्वारा संपादित
रफ द्वारा संपादित टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित